सचित्र

ब्रज गाइड

नन्दभवन, गोकुल
Nand Bhawan, Gokul
নন্দভবন, গোকুল

बिड़ला मन्दिर, मथुरा Birla Temple, Mathura বিড়লা মন্দির, মথুরা
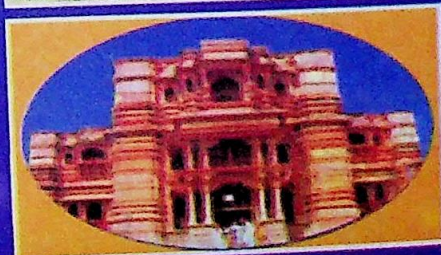
ब्रज गाइड
टूरिस्ट गाइड

ब्रज-भ्रमण के लिए मार्ग-दर्शन तथा मन्दिरों में आरती-पूजन के समय का ज्ञान कराने वाली पुस्तक

लेखक :

प्रशान्त भार्गव

प्रकाशक :

भार्गव प्रकाशन

886, शीतला घाटी, मथुरा ।

 (0565) 2411006

मूल्य **12/-**

पुनीत स्थल ब्रजधाम

भौगोलिक मानचित्र में यद्यपि ब्रज नाम का कोई स्थल या प्रदेश नहीं है तथापि 'ब्रज' का अपना विशिष्ट अस्तित्व है । इसकी अपनी विशेष संस्कृति है । अपनी भाषा है, अपना अनुपम साहित्य है । इसी आधार पर ही कदाचित यहाँ के लोगों की मांग 'ब्रज प्रदेश' के निर्माण हेतु उठाई जाती रही है ।

प्राचीन ब्रज में 12 वन, 24 उपवन तथा 5 पर्वतों का समावेश बताया जाता है । सूरदास जी ने गाया है-'चौरासी ब्रज कोस निरन्तर खेलत हैं वन मोहन' इस प्रकार ब्रजधाम का विस्तार चौरासी कोस निश्चित होता है । किन्तु ब्रज से सम्बन्धित भूमि तथा संस्कृति का विस्तार इससे अधिक है । मथुरा को केन्द्र मानकर आगरा, ग्वालियर, भरतपुर, अलीगढ़, एटा, गुड़गाँव, मेरठ आदि जिलों तक जहाँ-जहाँ ब्रजभाषा बोली व समझी जाती है, ब्रज का क्षेत्र माना जा रहा है ।

ब्रज का माहात्म्य

स्कन्द पुराण के अनुसार भगवान श्रीकृष्णजी के प्रपौत्र श्री ब्रजनाभ ने महाराज परीक्षत के सहयोग से श्रीकृष्णजी की लीला स्थलियों का प्राकट्य कराया, अनेकों मन्दिरों, कुण्ड, बाबड़ियों आदि का निर्माण कराया । महाप्रभु बल्लभाचार्य, श्री चैतन्य महाप्रभु आदि ने सम्पूर्ण ब्रज चौरासी कोस की यात्राएँ की हैं । इस तरह ब्रज के गौरव का इतिहास बहुत प्राचीन है । 'ऊधौ मोय

ब्रज बिसरत नाहीं' ये शब्द हैं ब्रज छोड़कर द्वारिका पहुँच क
द्वारिकाधीश बनने वाले श्रीकृष्णजी के । ब्रज की याद कर
जिनके नेत्रों में अश्रु छलक उठते थे । यहाँ ब्रजराज कहला
जाने वाले सर्वेश्वर प्रभु को गोप-ग्वालों और गोपिकाओं
साथ मनोहारी अद्भुत लीलाएँ करते देखकर स्वयं ब्रह्माजी क
भी शंका उत्पन्न हुई थी कि यह कैसा भगवद् अवतार बताय
जा रहा है । अन्त में वे भी हार मानकर कहते हैं -'अहो भाग्यम
अहो भाग्यम !! नन्दगोप ब्रजो कसाम ।' इसी ब्रज भूमि पर
चरण रखते ही ब्रह्मज्ञानी उद्धव का सब ज्ञान ही लुप्त हो गया
और अन्त में उन्हें भी कहना पड़ा-

ब्रज समुद्र मथुरा कमल, वृन्दावन मकरन्द ।
ब्रज-बनिता सब पुष्प हैं, मधुकर गोकुल चन्द ॥

ब्रज के माहात्म्य को कहाँ तक कहा जाय ? सभी सम्प्रदायों के आचार्यों ने ब्रज की महिमा का गुणगान किया है । इसकी समता का कोई अन्य भूमिखण्ड नहीं है । यहाँ स्वयं परमात्मा परमेश्वर नर रूप धारण कर 'नन्द-नन्दन' के रूप में निराकार से साकार हो गये हैं ।

ब्रज धाम में बालक-बालिकाओं से श्रीकृष्ण के बालरूप की अनुभूति होती है और वे भगवान् के सखाभाव से स्मरण होते हैं । युवा-युवतियों को उनके लीलारूप की अनुभूति होती है । ब्रज प्रदेश की सभी बीथियों में उनको राधा-कृष्ण का पावन प्रेम बिखरा प्रतीत होता है । यहाँ की हर एक गतिविधि उनको आज भी दिव्य दिखाई देती है । वृद्धों के हृदय में भगवान

ी विरहाग्नि प्रज्वलित हो उठती है । उनको राधा-कृष्ण का न
ना वैराग्य की ओर प्रेरित करता है । ब्रज की ऐसी ही विचित्र
हिमा है ।

ब्रज में जितने भी स्थान हैं वे प्रायः सभी श्रीकृष्ण की
ीला-स्थली हैं । इन सभी में भगवदीय पुनीत भाव व्याप्त हैं ।
ागे के पृष्ठों में हमने यात्रियों तथा पर्यटकों को जानकारी के
लए प्रमुख लीला-स्थलियों का क्रमशः वर्णन किया है ।

मथुरा

प्राचीनकाल से मथुरा एक प्रसिद्ध नगर रहा है । आर्यों का
यह पुण्यतम नगर है और दीर्घकाल से प्राचीन भारतीय संस्कृति
एवं सभ्यता का केन्द्र रहा है । भारतीय धर्म, कला एवं साहित्य
के निर्माण तथा विकास में मथुरा का महत्वपूर्ण योगदान सदा
से रहा है । आज भी महाकवि सूरदास, संगीत के आचार्य स्वामी
हरिदास, स्वामी दयानन्द के गुरु स्वामी-विरजानन्द, कवि रसखान
आदि महान आत्माओं से इस मथुरा का नाम जुड़ा हुआ है ।

योगीश्वर आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्ण की जन्म स्थली
होने के कारण यह वैष्णवों का तो महान तीर्थ स्थल है ही किन्तु
जैन तथा बौद्ध धर्म भी शताब्दियों तक यहाँ फलते-फूलते रहे हैं। जिनके
मन्दिर-मठों के अवशेष इस क्षेत्र में यत्र-तत्र दृष्टिगत हैं ।

यह प्राचीन काल में भारत के प्रबल-प्रतापी यदुवंशियों के
'शूरसेन' नामक गणराज्य की राजधानी थी जो तत्कालीन
राजनीति का एक प्रमुख केन्द्र थी । मनुस्मृति, वृहत्संहिता,

महाभारत, ब्रह्मपुराण, वाराह पुराण, अग्निपुराण, हरिवंशपुराण, वाल्मीकि रामायण आदि अनेक प्रमुख ग्रन्थों में इसका मधुरा, मधुपुरी, महुरा, मधुपुर नाम से उल्लेख मिलता है तथा प्राचीन अभिलेखों में 'मथुरा' तथा 'मथुला' भी देखने में मिलता है ।

काशी की भांति यह भारत की प्राचीन सप्तपुरियों में से एक है तथा 'अयोध्या', मथुरा, माया, काशी, काँची, अवन्तिका पुरी द्वारावति चैव सप्तमे मोक्षदायिका' साधारणतः इसके बारे में लोग कहते हैं-'मथुरा तीन लोक से न्यारी यामें जन्मे कृष्णमुरारी' यह उक्ति विशेष महत्वपूर्ण है ।

मथुरा को पहले 'मधुपुरी' भी कहा जाता था । कहते हैं कि इसे 'मधु' नामक दैत्य ने बसाया था । कालांतर में यह 'शूरसेन' राज्य की राजधानी बनी और उसी वंशानुक्रम में उग्रसैन के आधिपत्य में आई । राजा उग्रसने के कंस नामक क्रूर पुत्र हुआ। जिसको मगध के घोर आततायी राजा जरासंध की अस्ति-नस्ति नामक दो कन्याएँ ब्याही थीं । कंस ने अपने पिता उग्रसेन को बन्दी बनाकर जेल में डाल दिया था और स्वयं स्वेच्छाधारी राजा के रूप में मथुरा के सिंहासन पर आरूढ़ हो गया । उसी क्रूर अत्याचारी कंस ने अपनी चचेरी बहिन देवकी तथा उसके पति वसुदेव को किसी आकाशवाणी को सुनकर अपने को निर्भय रखने के विचार से जेल में डाल दिया था । कंस तथा उसके क्रूर शासन को समाप्त करने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण ने देवकी के गर्भ से कारागृह में जन्म लिया और अद्भुत लीलाओं के क्रमों का विकास करते हुए अपने मामा कंस का वध करके

ब्रजवासियों के कष्टों को दूर किया । अपने माता-पिता तथा नाना उग्रसेन को कारागृह से मुक्त कराया तथा उन्हें पुनः सिंहासन पर बिठाया ।

अपने जामाता कंस के मारे जाने पर जरासंध ने बहुत क्रोध किया । वह श्रीकृष्ण से निरन्तर युद्ध करता रहा और अंत में श्रीकृष्ण की कूटनीति के जाल में फँसकर भीम द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ ।

मथुरा की स्थिति

मथुरा जिला उत्तरी अक्षांश 27/28 तथा पूर्वी देशान्तर 77/41 के मध्य है तथा मथुरा नगर यमुना तट पर बसा है । दिल्ली के निकट होने के कारण मथुरा को सदैव संघर्षों का सामना करना पड़ा है । सन् 1803 ई० में दौलतराव सिंधिया को परास्त करने के उपरान्त ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने इस पर अपना कब्जा किया और इसे फौजी छावनी बना दिया गया ।

रेल-सेवा मार्ग

मथुरा दिल्ली से 145 किमी० और आगरा से 58 किमी० दूर है । रेलों का महत्वपूर्ण जंक्शन है । सेण्ट्रल रेलवे की समस्त रेलें दिल्ली से बम्बई तथा नागपुर, हैदराबाद, विजयबाड़ा, बैंगलौर, मद्रास जाने वाली गाड़ियाँ यहाँ होकर जाती हैं । वेस्टर्न रेलवे ब्रॉड गेज की समस्त रेलें दिल्ली से बम्बई, बड़ोदा, सूरत, पूना आदि स्थानों को जाने वाली गाड़ियाँ यहाँ ठहरती हैं ।

वैस्टर्न रेलवे की पैसेन्जर गाड़ियाँ बड़ौदा तक जाने वाली, यहाँ से हावड़ा जाने वाली नार्थन रेलवे की प्रमुख रेलगाड़ी तूफान एक्सप्रेस मथुरा ठहरती है और आगरा होती हुई टूण्डला से हावड़ा लाइन पकड़ लेती है । अलवर (राजस्थान) को भी गोवर्धन होते हुए रेलमार्ग अब बन गया है ।

नार्थ ईस्टर्न रेलवे की सभी रेलें जो आगरा से काठगोदाम, कानपुर और लखनऊ जाती हैं, मथुरा जंक्शन तथा मथुरा छावनी दोनों ही स्टेशनों पर ठहरती हैं । मथुरा जंक्शन से एन० ई० रेलवे की एक यात्री गाड़ी वृन्दावन जाती और वहाँ से वापिस आती है । इस प्रकार वृन्दावन आने वाले और वृन्दावन से बाहर जाने वाले यात्रियों को पूर्ण सुविधा रहती है । अब इन लाइनों को बड़ी लाइनों में बदलने का कार्य जारी है ।

यहाँ मुसाफिर खाना और लगेज तथा रिक्शा, ताँगा आदि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं । मथुरा जंक्शन वृन्दावन रेलमार्ग पर एन० ई० रेलवे का मसानी नामक प्रमुख स्टेशन भी है । आगरा से काठगोदाम, कानपुर, कासगंज और लखनऊ जाने वाली सभी गाड़ियाँ एन० ई० रेलवे के मथुरा छावनी स्टेशन पर रुकती हैं । यह स्टेशन शहर के निकट है और मुसाफिर खाना, लगेज रूम एवं यातायात के सभी साधन उपलब्ध हैं ।

मोटर बस सेवा मार्ग

मथुरा अपनी महत्वपूर्ण स्थिति के कारण मोटर बस यातायात का प्रमुख केन्द्र है । यहाँ से राजकीय बसें उत्तर प्रदेश,

मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली आदि राज्यों को जाती और वहाँ से आती हैं । यहाँ पर दो बस स्टैण्ड हैं :-

(1) पुराना बस स्टैण्ड

(2) भूतेश्वर बस स्टैण्ड

प्राचीन नगरी मथुरा की नवीन विशेषताएँ

मथुरा धार्मिक नगरी है । यहाँ धार्मिक ग्रन्थों का प्रकाशन बड़ी मात्रा में होता है और देश के विभिन्न भागों के लिए ही नहीं अपितु विदेशों को भी ये धार्मिक पुस्तकें सप्लाई होती है । इसके अलावा छपी हुई साड़ियों, डोरी निवाड़, सोड़ा, चूर्ण तथा औषधियों आदि के अनेकों कारखाने हैं । पेड़ा, खुरचन यहाँ के प्रसिद्ध उपहार हैं । यहाँ प्रसिद्ध तेल शोधक कारखाना (रिफायनरी) भी है । दूरदर्शन का रिले केन्द्र एवं आकाशवाणी का मथुरा-वृन्दावन नाम से प्रसारण केन्द्र है जहाँ से ब्रज के सांस्कृतिक प्रोग्रांम होते हैं । वेटरनरी कालेज, पी.एम.बी. पोलीटेक्निक के अलावा बी. एस. ए. कालेज, किशोरी रमण डिग्री कालेज, दीक्षा विद्यालय, किशोरी रमण गर्ल्स डिग्री कालेज, चमेली देवी, अनार देवी एवं प्रेम देवी आदि अनेक कन्या शिक्षण संस्थाएँ शिक्षा जगत् में अपना नाम प्रसिद्ध किये हुए हैं ।

प्रमुख धर्मशालायें

1. वार्ष्णेय धर्मशाला पुराने बस स्टेण्ड के सामने मुख्य सड़क पर है ।
2. स्वामी लीलाशाह सिन्धी धर्मशाला पुराना रोडवेज बस स्टेण्ड के पीछे है ।
3. धर्मशाला गरीबदास (गौड़िया मठ) कैन्ट स्टेशन पर ।

4. अग्रवाल धर्मशाला-तिलकद्वार चौराहे पर ।
5. अहमदाबाद वाली धर्मशाला-छत्ता बाजार ।
6. दामोदर भवन-छत्ता बाजार ।
7. महाराष्ट्र मण्डल-गोलपाड़ा भवन में ।
8. जबलपुर वाली कुञ्ज-सतघड़ा गली में ।
9. शेरगढ़ वालों की धर्मशाला-सतघड़ा गली में ।
10. करमसीदास जी धर्मशाला-विश्राम घाट ।
11. हाथरस वालों की धर्मशाला-नया बाजार में ।
12. कलकत्ता वालों की धर्मशाला-नया बाजार ।
13. हीरालाल धर्मशाला-स्वामी घाट ।
14. अग्रवाल धर्मशाला-कुशक गली में ।
15. गंगोलीमल गजानन धर्मशाला-मण्डी रामदास में ।
16. बिड़ला मन्दिर धर्मशाला-बिड़ला मन्दिर के सामने ।
17. अन्तर्राष्ट्रीय अतिथिगृह-कृष्ण जन्मभूमि ।
18. नयी अग्रवाल धर्मशाला-भरतपुर दरवाजा मथुरा ।
19. चित्रगुप्त धर्मशाला-भरतपुर दरवाजा ।
20. कलकत्ता वालों की धर्मशाला-आर्य समाज रोड ।
21. भिवानी वाली धर्मशाला-आर्य समाज रोड ।
22. मोरवी वालों की धर्मशाला-बंगाली घाट ।
23. बम्बई वालों की धर्मशाला-बंगाली घाट ।
24. सेठ तेजपाल गोकुलदास की धर्मशाला-मारू गली ।
25. सिक्खों का गुरुद्वारा-तिलकद्वार ।
26. यशोदा भवन-आर्य समाज रोड ।
27. यात्री निवास-आर्य समाज रोड ।
28. सिन्धी धर्मशाला-बंगाली घाट ।

29. श्री राधेश्याम आश्रम-पुल के पास, बंगाली घाट ।
30. गोवर्धन भवन-बंगाली घाट पर है ।
31. गिरधर मुरारी धर्मशाला-बंगाली घाट ।
32. नाड़ियाद वालों की धर्मशाला-बंगाली घाट ।
33. वेणुनाथ भवन-बंगाली घाट ।
34. दाम्बूल निवास-श्याम घाट ।
35. लड्ढा कुञ्ज-राम घाट ।
36. दिल्ली वालों की धर्मशाला-सती बुर्ज के पास ।
37. डांगावाली धर्मशाला-दाऊजी मन्दिर के पास ।
38. नेमसीवाली धर्मशाला-रामघाट ।
39. गुजरात भवन-मानिक चौक ।
40. लक्ष्मी नारायण स्मृति भवन, हालन गंज ।
41. खत्री धर्मशाला-रेलवे फाटक के पास जनरल गंज ।
42. सोनी धर्मशाला-श्रीकृष्ण जन्मभूमि ।
43. उ. प्र. पर्यटन आवास गृह-सिविल लाइन ।
44. सा. नि. वि. निरीक्षण भवन-आगरा रोड।
45. वन विभाग विश्राम गृह-छावनी में ।
46. किसान भवन-दीनदयाल नगर (डेम्पियर)
47. श्रीजी बाबा आश्रम-भूतेश्वर रोड ।
48. स्वामी नारायण अतिथि गृह-कम्पूघाट ।
49. नवनीत अतिथि गृह-बंगाली घाट ।
50. कालिन्दी सेवा ट्रस्ट-दाऊजी घाट ।

इनके अलावा मथुरा नगर में कुछ अन्य धर्मशालायें भी हैं । जो गलियों में बनी हैं । अनेकों धर्मशालायें मथुरा के चतुर्वेदी समाज के प्रबन्ध में हैं । जिनमें अपने जिजमानों (यात्रियों) को वे अपनी सुविधा से ठहराते हैं ।

प्रमुख होटल

होटल लीला सदन- चौकी बाग बहादुर ।

होटल ब्रजराज-जन्मभूमि ।

जयश्री होटल-बाईपास ।

होटल राजमहल, तिलक द्वार ।

मार्डन होटल-बार-लक्ष्मी टाकीज के पास ।

क्वालिटी होटल- डैम्पीयर रोड के पास ।

मथुरा टूरिस्ट लॉज- बस स्टैण्ड (आगरा रोड)

मोहन होटल-छत्ता बाजार ।

होटल सूर्या इंटरनेशनल-वर्कशाप के सामने ।

गुजराती होटल-कंसखार पर दाऊजी मन्दिर में ।

होटल नेपाल-नये बस स्टेण्ड के सामने ।

आगरा होटल-बंगाली घाट पर ।

मयूर लॉज-डैम्पीयर नगर ।

होटल मुकुन्द बिहार-मसानी पर ।

होटल मधुवन-राधा नगर (कृष्णानगर)

होटल राधा अशोक-दिल्ली बाईपास रोड ।

गुजराती मारवाड़ी वासा-गली सेठ भीकचन्द ।

गोवर्धन होटल-गली सेठ भीकचन्द ।

अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह एवं भोजनालय-कृष्ण जन्मभूमि पर ।

गौरव गैस्ट हाउस-डैम्पीयर नगर ।

मथुरा से अन्य दर्शनीय स्थलों की दूरी

मथुरा भगवान् श्रीकृष्ण के जन्मस्थान के कारण सुप्रसिद्ध है तो अन्य स्थल उनकी लीला-स्थलियों के रूप में दर्शनीय हैं

जिनमें वृन्दावन 10 किलोमीटर, गोकुल 10, महावन 19, बल्देव (दाऊजी) 22, गोवर्धन 24 राधाकुण्ड 28, नन्दगाँव 53, बरसाना 42 किलोमीटर है । यात्रियों को आने-जाने को मोटर बस, टेम्पो, थ्री व्हीलर, टेक्सी, ताँगे, रिक्शा उपलब्ध रहते हैं ।

बल्लभ-सम्प्रदाय के स्थल

1. श्री बल्लभाचार्य की बैठक-मणिकर्णिका घाट ।
2. स्वामी कीलजी की गुफा-गली कीलमठ में ।
3. श्रीनाथ जी की बैठक-तुलसी चबूतरा ।
4. सातों स्वरूपों के घर-गली सतघड़ा ।
5. तुलसी थामला-गली तुलसी चबूतरा में ।

प्रमुख बस, मिनी बस, टैक्सी ऑपरेटर्स

ब्रज बिहार बस सर्विस-तिलकद्वार एवं बंगाली घाट ।

अग्रवाल ट्रैवल्स-तिलकद्वार ।

गौतम ट्रैवल्स-तिलकद्वार ।

पूर्णा रोडवेज-तिलकद्वार ।

अशोक ट्रैवल्स-तिलकद्वार ।

टैक्सी स्टैण्ड-तिलकद्वार पर अप्सरा टाकीज के पीछे

कुमार ट्रैवल्स-मंडी रामदास ।

मथुरा के प्रमुख घाट

मथुरा में यमुनाजी अर्द्ध चन्द्राकार बह रही है । यमुनाजी

के पच्चीस घाटों में विश्राम घाट प्रमुख है जो मध्य में है अर्थात् बारह घाट इसके उत्तर की ओर और बारह घाट दक्षिण की ओर हैं। कुछ ही घाटों को छोड़कर सभी दयनीय जीर्ण-शीर्ण दशा में हैं। इनकी देखरेख न होने से इनकी सीढ़ियाँ टूट-फूट गई हैं। कलात्मक स्थापत्यकला के नमूने की छतरियाँ-जालियाँ आदि अब प्रायः कम ही रह गई हैं। अतिक्रमण से घाटों को दबा भी दिया गया है। यमुना की धारा बदलने का भी असर घाटों की सुन्दरता को कम करता है। घाटों में विश्राम घाट सहित चक्रतीर्थ घाट, कृष्ण गंगा घाट, गौ घाट, स्वामी घाट, असकुण्डा घाट, प्रयाग घाट, बंगाली घाट, सूरज घाट और ध्रुव घाट आदि के नाम हैं। यहाँ पर राज्य सरकार के द्वारा गोकुल बैराज बन रहा है जो कि लगभग पूर्ण हो चुका है, जिससे यहाँ पर यमुना में जल की अधिकता रहेगी और यमुना के दोनों साइड प्लेटफार्म व सौन्दर्यीकरण की योजना है जो कि राज्य सरकार द्वारा जल्दी ही पूरी होगी।

मथुरा के प्रमुख उत्सव तथा मेले

मथुरा अपने धार्मिक उत्सवों के लिए प्रसिद्ध है। वैसे यहाँ वर्ष भर उत्सव होते रहते हैं। परन्तु बाहर से यात्री बड़ी संख्या में उत्सवों को देखने व उनका आनन्द प्राप्त करने आते हैं।

यमुना षष्ठी-चैत सुदी छठ। विश्राम घाट पर यमुनाजी का महोत्सव होता है।

दुर्गाष्टमी-चैत सुदी अष्टमी को समस्त देवी मन्दिरों पर उत्सव होता है।

रामनवमी-चैत सुदी नवमी को सभी मन्दिरों में राम जन्म का महोत्सव होता है ।

नरसिंह उत्सव-वैशाख सुदी चौदस को भगवान नरसिंह की पुनीत लीला सभी बड़े मन्दिरों में होती है ।

वन बिहार-वैशाख पूर्णिमा को संध्या समय के वाद रात्रि में मथुरा नगर की परिक्रमा प्रारम्भ होती है ।

ज्येष्ठ दशहरा-ज्येष्ठ सुदी दशमी को यमुना स्नान को भारी भीड़ होती है ।

जल यात्रा-जेठ की पूर्णिमा को यमुना जल से सभी मन्दिरों में अभिषेक कराया जाता है ।

रथ यात्रा-आषाढ़ सुदी दौज को श्री द्वारिकाधीश आदि सभी पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में उत्सव होते हैं ।

व्यास पूर्णिमा-गुरु पूजा के दिन सभी मन्दिरों में विशेष दर्शनों की व्यवस्था है । मथुरा की परिक्रमा लगती है । श्री गोवर्धन की परिक्रमा का यह विशेष पर्व है, दूर-दूर से यात्री लाखों की संख्या में आते हैं व परिक्रमा लगाकर अपने को धन्य मानते हैं ।

हरियाली तीज-श्रावण सुदी तीज को द्वारिकाधीश में लहरिया घटा बनती है । वैसे सभी मन्दिरों में झूले और हिंडोले पड़ते हैं । श्रीबाँकेबिहारी एवं श्रीद्वारिकाधीश जी के मन्दिरों के विशेष उत्सव प्रसिद्ध हैं ।

पंचतीर्थ-श्रावण सुदी पंचमी । धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ हो जाता है जो पाँच दिन तक चलता है । पहले दिन मधुवन

यात्रा, दूसरे दिन शांतनु कुण्ड यात्रा, तीसरे दिन गोकर्ण महादेव यात्रा, चौथे दिन गरुड़ गोविन्द यात्रा होती है । इन सभी स्थानों पर उत्सव होते हैं एवं मेले लगते हैं ।

रक्षा बन्धन-श्रावण पूर्णिमा को समस्त मन्दिरों में विशेष दर्शन होते हैं । द्वारिकाधीश में श्वेत घटा के दर्शन होते हैं । भूतेश्वर पर मेला लगता है एवं पहलवानों की कुश्ती का दंगल होता है ।

जन्माष्टमी-भादों वदी अष्टमी को समस्त मन्दिरों में भगवान् श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव होता है । रात्रि के बारह बजे विशेष दर्शन होते हैं । द्वारिकाधीश के मन्दिर में एवं श्रीकृष्ण जन्म स्थान पर विशेष महत्वपूर्ण रीति से उत्सव मनाया जाता है ।

राधा अष्टमी-भादों सुदी अष्टमी को सभी मन्दिरों में राधिका जी का जन्मोत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है ।

दान लीला-भादों सुदी एकादशी को मधुवन, तालवन और कुमुदवन की परिक्रमा होती है । इन्हीं दिनों में पुष्टिमार्गीय गोसाईं अपनी ब्रज यात्राएँ आरम्भ करते हैं ।

विजय दशमी-क्वार सुदी दशमी को राम-लीला सभा द्वारा महाविद्या मैदान में रावण-वध का विशाल मेला होता है तथा उत्तम आतिशबाजी होती है ।

दीपावली-कार्तिक अमावस्या को तथा कार्तिक सुदी पड़वा को दीपदान व अन्नकूट के दर्शन मन्दिरों में होते हैं ।

यमद्वितीया-कार्तिक सुदी दौज । यमुना स्नान के लिए लाखों नर-नारी आते हैं । रात्रि के अन्तिम पहर से स्नान प्रारम्भ हो जाता है और सूरज छिपने तक चलता है ।

धोबी बध-कार्तिक सुदी सप्तमी को कंस वध समारोह के
र्गत श्रीकृष्ण के द्वारा कंस के धोबी का वध होता है ।

गौ-चारण-कार्तिक सुदी अष्टमी को भगवान् श्रीकृष्ण
सुन्दर झाँकियाँ एवं गाएँ नगर भ्रमण करती हैं ।

अक्षय नवमी-कार्तिक सुदी नवमी को तीनों वनों की
क्रमा लगती है ।

कंस वध-कार्तिक सुदी दशमी को कंस टीले पर इस लीला
आयोजन होता है । कंस का एक पुतला टीले पर रखा जाता
श्रीकृष्ण बलराम के स्वरूपों की झाँकी बनाकर चतुर्वेदी
ाज विविध प्रकार के वस्त्रों से सजकर मोटे-मोटे लट्ठ
ये यहाँ पहुँचते हैं । कंस का सिर अलग कर देते हैं और शेष
ड़ को लट्ठों से पीटते हैं । कंस के सिर को सवारी के साथ
जे-बाजे से नाचते हुए कंसखार पर होकर विश्राम घाट पर
कर नष्ट कर देते हैं ।

देवोत्थानी एकादशी-कार्तिक सुदी एकादशी को तीनों वनो
ी परिक्रमा लगती है, परिक्रमा मथुरा से गरुड़गोविन्द होकर
न्दावन जाती है और वहाँ से मथुरा लौटती है, सभी मन्दिरों में
व-दर्शन होते हैं।

बसन्तोत्सव-बसंत पंचमी को सभी मन्दिरों में उत्सव होते
।भगवान के विशेष श्रृंगार होते हैं। दुर्वासा ऋषि के मन्दिर पर
ला लगता है ।

महाशिव रात्रि-फाल्गुन कृ. त्रयोदशी को शंकर भगवान
े सभी मन्दिरों में विशेष दर्शन होते हैं । रात्रि के बारह बजे

भगवान शिव का अभिषेक होता है और रात भर जागरण होता है और फूल बंगले बनते हैं ।

होली उत्सव-रंग भरनी एकादशी से ही समस्त मन्दिरों में फाग उत्सव प्रारम्भ होते हैं । नगर में सवारी निकलती है । ये उत्सव दौज तक चलते हैं ।

सोमवती अमावस्या-वर्ष में जब भी सोमवती अमावस्या पड़ती है तभी यमुना में स्नान करने वालों की भीड़ होती है । सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण के अवसर पर मन्दिरों में विशेष आयोजन होते हैं। जब तक ग्रहण पड़ता है, तब तक कीर्तन, कथा एवं भजन का कार्यक्रम रहता है । ग्रहण समाप्त हो जाने के उपरान्त भगवान के दर्शन होते हैं । सूर्य ग्रहण पर अक्रूर घाट पर और चन्द्र ग्रहण पर विश्राम घाट आदि घाटों पर स्नान की परम्परा है।

मथुरा की परिक्रमा

मथुरा में परिक्रमा की एक प्राचीन परम्परा है । हर माह एकादशी, अमावस्या और पूर्णिमा को भक्तजन मथुरा की परिक्रमा करते हैं । पुरुषोत्तम अर्थात् अधिक मास में नित्य परिक्रमा लगती है विशेष परिक्रमा ग्रहण के समय, वन बिहार, देव शयनी, अक्षय नवमी, देवोत्थान एकादशी पर लगती है । मथुरा की परिक्रमा लगभग ग्यारह मील पड़ती है । उसके मार्ग में प्रायः समस्त प्रमुख देव-स्थान एवं दर्शनीय स्थान आ जाते हैं। परिक्रमा विश्राम घाट से आचमन लेकर प्रारम्भ होती है और इसी स्थान पर लौटकर समाप्त होती है ।

तीन वनों की प्रसिद्ध परिक्रमा

यह परिक्रमा अक्षयनवमी एवं देवोत्थानी एकादशी को
गती है । मथुरा की परिक्रमा सरस्वती कुण्ड से मथुरा-दिल्ली
ड पर छटीकरा तक जाती है और वहाँ से गरुड़गोविन्द की
ड़क पर होकर सीधी वृन्दावन रमणरेती पहुँचती है । रमणरेती
यमुना घाटों पर होती हुई प्रमुख मन्दिरों में दर्शन-झाँकी करते
ए परिक्रमार्थी यमुना किनारे होकर अक्रूर मन्दिर, पागल बाबा
न्दिर, बिड़ला-गीता-मन्दिर होकर मथुरा आते हैं ।

प्रमुख दर्शनीय मन्दिर एवं स्थल

मथुरा श्रीकृष्ण-राधा की पूजा और वैष्णव धर्म का प्रमुख
केन्द्र है । वाराह पुराण, अग्नि पुराण आदि अन्य ग्रन्थों में मथुरा
ऐसे तीर्थ स्थल के रूप में वर्णित हुआ है जिससे प्रतीत होता है
कि इनके समान महत्वपूर्ण कोई अन्य तीर्थ नहीं है ।

श्री कृष्ण जन्मभूमि

(कटरा केशवदेव)

सभी प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ताओं द्वारा यह प्रमाणित हो गया है
कि कटरा केशवदेव राजा कंस का भवन रहा था और भगवान्
श्रीकृष्ण का जन्म यहीं हुआ था । यहीं प्राचीन मथुरा बसी हुई
थी । इससे पूर्व मधु नाम के राजा ने जो मधुपुरी बसाई थी, वह
आज महोली के स्थान पर थी । यही बात विदेशी यात्रियों की
पुस्तकों से भी प्रमाणित होती है । यहाँ पर समय-समय पर
अनेक बार भव्य मन्दिरों का निर्माण होता रहा जिन्हें हर बार

विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा नष्ट किया जाता रहा है । अन्त में सन् 1669 में औरंगजेब ने इस प्राचीन स्मारक को तोड़कर उसी के मलवे से ईदगाह मस्जिद का निर्माण कराया जो आज भी विद्यमान है । ब्रिटिश शासनकाल में ही यह समस्त जगह बनारस के राजा पटनीमल ने खरीद लीं थी ताकि यहाँ फिर से श्रीकृष्ण मन्दिर का निर्माण हो सके । महामना पं० मदनमोहन जी मालवीय एवं श्री जे. के. बिड़ला के प्रयत्नों से एक श्रीकृष्ण जन्मभूमि ट्रस्ट बनाया गया जिसने अब यहाँ एक विशाल मन्दिर का निर्माण कराया है । यहाँ आयुर्वेदिक औषधालय, पाठशाला, पुस्तकालय एवं भोजनालय और यात्रियों के ठहरने के लिए विशाल अतिथि गृह का निर्माण हो चुका है ।

श्रीमद्भागवत भवन

श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर एक विशाल श्रीमद्भागवत भवन का अद्वितीय निर्माण किया गया है जिसमें श्री राधाकृष्ण, श्री लक्ष्मीनाराण एवं जगन्नाथजी के विशाल मनोहर दर्शन हैं । यहाँ पारे का एक शिवलिंग अनोखा आकर्षण है ।माँ दुर्गे एवं हनुमानजी की भी मूर्तियाँ स्थापित है । महामना पं० मदनमोहन मालवीय, श्रीहनुमान प्रसाद जी पोद्दार एवं बिड़लाजी की आदम-कद मूर्तियाँ भी स्थापित हैं । विद्युत चालित मूर्तियों से श्रीकृष्ण लीलाओं के बड़े ही सुन्दर व मनोहारी दर्शन कराये जाते हैं । श्रावण मास व भाद्रपद मास में यहाँ बड़ा भारी मेला लगता है । श्रीकृष्ण-जन्म का समारोह बड़े ही हर्षोल्लास के

साथ मनाया जाता है एवं रासलीलायें कई दिनों तक होती हैं । क्वार के महीने में यहाँ के रंगमंच पर श्री रामलीलायें होती हैं । ट्रस्ट द्वारा श्रीकृष्ण संदेश नामक पत्रिका एवं अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया जाता है ।

श्री द्वारिकाधीश मन्दिर

श्री केशवराय मन्दिर (कटरा केशवदेव) के सन् 1669 ई० में नष्ट हो जाने के बाद गुजराती वैश्य श्रीगोकुलदास पारिख ने इस मन्दिर का निर्माण कराके इस कमी को पूरा किया । असकुण्डा घाट के समीप बाजार में स्थित इस विशाल मन्दिर का निर्माण सन् 1814-15 के लगभग हुआ । इस मन्दिर की व्यवस्था के लिए अचल सम्पत्ति संलग्न है ताकि उसके किराये से मन्दिर की सुचारु रूप से व्यवस्था होती रहे । इसकी सेवा-पूजा कांकरौली के पुष्टिमार्गीय गोसाईयों द्वारा होती है । प्रसाद मन्दिर में अपनी पाकशाला में तैयार होता है ।

मन्दिर 108 फुट लम्बी और 120 फुट चौड़ी कुर्सी पर स्थित है । स्थापत्य कला की दृष्टि से भी मन्दिर का पर्याप्त महत्व है । कलात्मक भव्य विशाल द्वार के बाहर अनेक दुकानें हैं । अन्दर अनेक सुदृढ़ एवं कलात्मक स्तम्भों पर मध्य में विशाल मण्डप है जिसमें बहुरंगी कलाकृतियों एवं शीशे का काम देखने योग्य है । श्री द्वारिकानाथ की सुन्दर एवं आकर्षक चतुर्भुजी श्याम मूर्ति है जिनकी चारों भुजाओं में गदा आदि आयुध विद्यमान हैं । बाईं ओर श्वेत स्फटिक की रुक्मिणीजी की सुन्दर मूर्ति है।

यहाँ सावन में हिंडोले का उत्सव होता है, घटाओं के अ
सुन्दर दर्शन होते हैं । जन्माष्टमी, होली, अन्नकूट आदि प्रमु
उत्सव हैं । श्री द्वारिकानाथ जी की एक दिन में आठ बार झाँकि
होती हैं । चार बार प्रातः मंगला, श्रृंगार, ग्वाल एवं राजभो
तथा चार बार सायं- उत्थापन, भोग, संध्या आरती एवं शयन
मंगला आरती की झाँकी 6.30 बजे होती है तथा शयन के दर्श
ग्रीष्मकाल में 7 बजे तक और शीतकाल में 6.30 बजे तक खु
रहते हैं ।

दशभुजी गणेश मन्दिर

श्री द्वारिकाधीश मन्दिर के पीछे गली में गणेश मन्दिर
जिसमें गणेशजी के विशाल एवं भव्य विग्रह के दर्शन हैं ।

श्रीनाथजी का मन्दिर

मानिक चौक में ही श्रीनाथजी का भव्य प्रतिमा वाला मन्दि
है । पाषाण की जाली-झरोखों की कलात्मकता देखने योग्य
है। बल्लभ सम्प्रदायी इस मन्दिर का निर्माण कुल्ली मल वैश्य
द्वारा कराया गया है ।

वाराहजी का मन्दिर

वाराहजी के मन्दिर के लिये द्वारिकाधीशजी की बजरिया
होकर जाते हैं । यहाँ मानिक चौक में वाराह भगवान की बहुत
ही चित्ताकर्षक प्रतिमा विराजमान है ।

गताश्रम नारायण मन्दिर

रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य श्रीप्राणनाथ शास्त्री द्वारा

सं० 1857 में इस मन्दिर का निर्माण हुआ । इस मन्दिर में श्रीविष्णु भगवान के दर्शन हैं ।

विजय गोविन्द मन्दिर

विरजानन्द बाजार में श्री विरजानन्दजी के स्मारक के सामने दतिया वालों का यह मन्दिर है ।

श्रीलक्ष्मीनारायण का मन्दिर

छत्ता बाजार में यह मन्दिर है जिसे आगरा जिले के श्री जयरामदास पालीवाल ने निर्मित कराया था । यह मन्दिर मूँगाजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है ।

श्री कन्हैयालाल जी का मन्दिर

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर के सामने छत्ता बाजार में ही यह मन्दिर है ।

श्रीगोवर्धननाथ जी का मन्दिर

छत्ता बाजार में ही यह स्थित है । श्री गोवर्धननाथ जी के सुन्दर श्यामल विग्रह के दर्शन हैं । सेठ शिवलाल द्वारा निर्मित यह मन्दिर सवा सौ साल पुराना बताया जाता है ।

श्री दाऊजी, मदनमोहनजी एवं गोकुलनाथ के मन्दिर

ये तीनों मन्दिर बंगाली घाट (राम घाट) पर स्थित हैं । वल्लभ सम्प्रदाय प्रमुख गुसांइयों द्वारा सेवित इन मन्दिरों की वास्तुकला तो आकर्षक नहीं, लेकिन मान्यता की दृष्टि से इनका

बहुत अधिक महत्व है । ये मन्दिर प्राचीन हैं तथा गुजराती या
के लिए ये आकर्षण का केन्द्र हैं । इनके गोसांइयों द्वार
महत्वपूर्ण चौरासी कोस की ब्रज यात्रायें उठाई जाती हैं ।

श्रीराम मन्दिर

रामजी द्वारा गली सेठ भीकचन्द में स्थित है । इस मन्दि
रामनवमी का महोत्सव बड़े ही धूम-धाम से मनाया जाता
श्रीरामजी एवं अष्टभुजी गोपालजी के अति सुन्दर दर्शन हैं

बिड़ला मन्दिर

यह मथुरा शहर से बाहर मथुरा वृन्दावन सड़क पर बिड़
द्वारा बनवाया गया है । मन्दिर में पाञ्चजन्य शंख
सुदर्शन-चक्र लिये हुए श्रीकृष्ण भगवान सीताराम
लक्ष्मीनारायणजी की मूर्तियाँ बड़ी मनोहारी हैं । दीवारों
चित्र एवं उपदेशों की रचना दर्शकों का मन मोह लेती हैं । ए
स्तम्भ पर सम्पूर्ण श्रीमद् भगवद् गीता लिखी हुई है त
स्थान-स्थान पर मूर्तियों आदि से सुसज्जित मन्दिर यात्री को भवि
रस-विभोर कर देता है । समीप ही बिड़ला धर्मशाला भी है ।

श्रीजी बाबा मन्दिर

श्रीकृष्ण जन्मस्थान एवं भूतेश्वर रोड रेलवे स्टेशन के समी
स्थित है । श्रीजी बाबा आश्रम में श्री मथुराधीश प्रभु के दर्श
हैं। आश्रम में एक सौ आवासीय कमरे हैं, विशाल जगमोह
तथा सत्संग भवन हैं ।

स्वामीनारायण मन्दिर

कम्पूघाट के समीप गुलाबी पत्थरों का दक्षिण भारतीय शैली का यह दर्शनीय मन्दिर है ।

श्री यमुना मन्दिर एवं विश्राम घाट

यह प्रमुख घाट नगरी के लगभग मध्य में स्थित है । इस घाट के उत्तर में 12 और दक्षिण में भी 12 घाट हैं । इस पर यमुनाजी का मन्दिर तथा आस-पास अन्य मन्दिर भी हैं । सायंकाल यमुनाजी की आरती का दृश्य मनोहारी होता है । ओरछा के राजा वीरसिंह देव ने इसी घाट पर 81 मन सोने का दान किया था । जयपुर, रींवा, काशी आदि के राजाओं ने भी बाद में यहाँ स्वर्ण दान किये थे । कहा जाता है कि श्रीकृष्ण-बलराम ने कंस का संहार करने के बाद यहीं विश्राम लिया था । चैत्त सुदी छठ को श्रीयमुनाजी का जन्मोत्सव होता है तथा यमद्वितीया के दिन लाखों यात्री दूर-दूर से आकर यहाँ स्नान करते हैं । कहा जाता है कि अपने भाई यम से श्री यमुना महारानी ने इसी दिन तिलक करके वरदान लिया था कि जो भाई-बहिन इस दिन यहाँ स्नान करेंगे, वह यमलोक गमन नहीं करेंगे । इस घाट पर स्नान करने के बाद भाई अपनी बहिन को उपहार स्वरूप वस्त्रादि भेंट करते हैं ।

सती बुर्ज

सन् 1570 ई० में राजा भगवानदास ने इस बुर्ज का उस स्थान पर निर्माण कराया था, जहाँ उनकी माँ राजा विहारीमल

की रानी सती हुई थीं । 55 फिट ऊँचा यह चौखण्डा बुर्ज लाल पत्थर का बना विश्राम घाट के पास है ।

शिवताल

बनारस के राजा पटनीमल ने मथुरा के कई मन्दिरों का निर्माण कराया और जीर्णोद्धार कराया था । कहते हैं कि उसने नगर की जल की आवश्यकता की पूर्ति हेतु इस सुन्दर तालाब का निर्माण कराया और इसके पास शिव मन्दिर भी बनवाया था । यह विशाल ताल पक्का एवं काफी गहरा है परन्तु आज यह उपेक्षित अवस्था में पड़ा है ।

जैन-चौरासी

जैन मन्दिर का स्थल चौरासी अति प्राचीन है । कहा जाता है कि जैन गुरु जम्बू स्वामी ने यहाँ तपस्या की थी । इस स्थान पर प्रतिवर्ष जैन मेला लगता है । जैन यात्री सदैव दर्शनार्थ आते रहते हैं । मथुरा के विविध स्थानों पर खुदाई के समय जैन काल के अनेकों अवशेष प्राप्त हुए हैं ।

पुरातत्व संग्रहालय

मथुरा का राजकीय पुरातत्व संग्रहालय देश में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है । यहाँ कुषाण, बौद्ध, जैन काल की अनेक मूर्तियाँ हैं । इनमें अधिकांश मूर्तियाँ 400 ई० पूर्व से लेकर 12वीं शताब्दी तक की हैं । श्रीकृष्ण जन्म स्थान एवं कंकाली टीले से खुदाई में प्राप्त अनेकों प्राचीन अवशेष यहाँ पर सुरक्षित हैं ।

पोतरा कुण्ड

श्री कृष्ण जन्मभूमि के पीछे पोतराकुण्ड नामक एक प्राचीन विशाल तथा गहरा कुण्ड है जिसके बारे में कहा गया है कि यहाँ श्रीकृष्ण के जन्म के समय उनके वस्त्र उप-वस्त्रों को धोया गया था । कुछ भी हो, यह कुण्ड वास्तव में बहुत ही महत्वपूर्ण है । हो सकता है, इसके जल से नगर की जलापूर्ति होती हो । यह कुण्ड इस समय सूखा पड़ा है । इसका जीर्णोद्धार कुछ समय पहले हुआ है ।

वृन्दावन धाम

मथुरा से 12 किमी० दूर उत्तर-पश्चिम में यमुना तट पर वृन्दावन 27.33 उत्तरी अक्षांश तथा 77.41 पूर्व देशान्तर पर भूमण्डल पर स्थित है । वृन्दावन का नाम जिह्वा पर आते ही मन पुलकित हो जाता है । योगेश्वर श्रीकृष्ण की मनोहारी मूर्ति आँखों के सम्मुख आ जाती है । उनकी दिव्य अलौकिक लीलाओं की कल्पना मात्र से ही मन भक्ति-भावना तथा श्रद्धा से नतमस्तक हो जाता है ।

वृन्दावन ब्रज का हृदय है जहाँ श्री राधाकृष्ण ने अपनी दिव्य लीलायें की हैं । इस पावन भूमि को पृथ्वी का अति उत्तम तथा परम गुप्त भाग कहा गया है । पद्म पुराण में इसे भगवान का साक्षात् शरीर, पूर्ण ब्रह्म मे सम्पर्क का स्थान तथा सुख का आश्रय बताया गया है । इसी कारण यह अनादि काल से भक्तजनों का श्रद्धा का केन्द्र बना हुआ है । चैतन्य महाप्रभु, स्वामी हरिदास, श्रीहित हरिवंश, महाप्रभु बल्लभाचार्य आदि

अनेक गोस्वमी महान आत्माओं का इसके वैभव को सजाने
निखाने और धर्म परायण भक्तों के लिये संसार की एक अनश्व
सम्पत्ति के रूप में प्रस्तुत करने में सर्वस्व लगा है । यहाँ आन
कन्द युगल किशोर श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा की अद्भुत नि
बिहार लीला होती रहती है ।

वृन्दावन की प्राकृतिक छटा देखने योग्य है । यमुना
इसको तीन ओर से घेरे हुए है । यहाँ के सघन कुञ्जों
भाँति-भाँति के पुष्पों से शोभित लता-पता तथा ऊँचे-ऊँचे घ
वृक्ष मन में उल्लास भरते हैं । बसंत ऋतु के आगमन पर तो य
की छटा और सावन-भादों की हरियाली आँखों को जो शीतल
प्रदान करती है, वह श्रीराधा-माधव के प्रतिबिम्बों के दर्शनों
ही प्रतिफल है ।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वृन्दावन का कण-क
रसमय है । यहाँ प्रेम-भक्ति का ही साम्राज्य है । इसे गोलो
धाम से अधिक बढ़कर माना गया है । यही कारण है कि हजा
धर्म-परायण जन यहाँ अपने-अपने कामों से अवकाश प्रा
कर अपने शेष जीवन को बिताने के लिए निवास स्थान बनाक
यहाँ रहते हैं । वे नित्य प्रति रास लीलाओं, साधु-संगतों, हरिन
संकीर्तन, भागवत आदि ग्रन्थों के होने वाले पाठों में सम्मिलि
होकर धर्म-लाभ करते हैं ।

वृन्दावन की प्राचीनता

श्रीमद्भागवत में वृन्दावन का उल्लेख नन्दादि गोपों द्वा
श्रीकृष्ण सहित गोकुल को छोड़कर वृन्दावन गमन करने
समय आता है जहाँ कि श्रीकृष्ण द्वारा अनेकानेक अद्भुत लील
की गई थीं । श्रीकृष्ण जी के प्रपौत्र वज्रनाभ ने शूरसेन प्रदेश

शासनाध्यक्ष बनने पर श्रीकृष्ण की समस्त लीला स्थलियों को प्रतिष्ठापित किया तथा अनेक मन्दिर, कुण्ड एवं सरोवरों आदि की स्थापना की थी । सन् 1515 में श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन पधारे । इसके अतिरिक्त स्वामी हरिदासजी, श्रीहित हरिवंश श्री निम्बार्काचार्य, श्रीलोकनाथ, श्रीअद्वैताचार्यपाद, श्रीमन्नित्यानन्दपाद आदि अन्यान्य अनेकों सन्त-महात्माओं ने वृन्दावन में निवास किया था । गुप्तकालीन महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य रघुवंश में कुबेर के चैत्ररथ नामक उद्यान से वृन्दावन की तुलना की है । 14 वीं शताब्दी में वृन्दावन की विद्यमानता का उल्लेख अनेक जैन-ग्रन्थों में भी मिलता है ।

इस पावन स्थली का वृन्दावन नामकरण कैसे हुआ इस सम्बन्ध में अनेक मत हैं । 'वृन्दा' तुलसी को कहते हैं । यहाँ तुलसी के पौधे अधिक थे । इसलिये इसे वृन्दावन कहा गया । वृन्दावन की अधिष्ठात्री देवी वृन्दा हैं । कहते हैं कि वृन्दादेवी का मन्दिर सेवा कुञ्ज वाले स्थान पर था । यहाँ आज भी छोटे-छोटे सघन कुञ्ज हैं । ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार वृन्दा राजा केदार की पुत्री थी । उसने इन वनस्थली में घोर तप किया था । अतः इस वन का नाम वृन्दावन हुआ । कालान्तर में यह वन धीरे-धीरे बस्ती के रूप में विकसित होकर आबाद हुआ । इसी पुराण में कहा गया है कि श्री राधा के सोलह नामों में से एक नाम वृन्दा भी है । वृन्दा अर्थात् राधा अपने प्रिय श्रीकृष्ण से मिलने की आकांक्षा लिये इस वन में निवास करती है और इस स्थान के कण-कण को पावन तथा रसमय करती हैं ।

आदि वृन्दावन इतिहास के पृष्ठों में

कुछ विद्वानों के अनुसार यह वह वृन्दावन नहीं है, जहाँ

भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी दिव्य लीलाओं के द्वारा प्रेम एवं भक्ति का साम्राज्य स्थापित किया था । ये लोग पौराणिक वर्णन को आधार लेकर कहते हैं कि वृन्दावन के समीप गोवर्धन पर्वत की विद्यमानता बताई है जबकि वह यहाँ से पर्याप्त दूरी पर है । कुछ लोग राधाकुण्ड को तो कुछ लोग कामां को वृन्दावन सिद्ध करते हैं । उस काल में यमुना वहीं होकर बहती थी । धीरे-धीरे यमुना का प्रवाह बदलता गया और वृन्दावन भी यमुना के तट के साथ-साथ बदलता रहा । प्राचीन वृन्दावन के लुप्त प्राय हो जाने से नवीन स्थल पर वृन्दावन बसाया गया । वृन्दावन कहीं भी रहा हो यह बात खोजी तथा तार्किकों के लिये छोड़ देनी चाहिये । इन बातों से वृन्दावन की महिमा में कोई कमी नहीं आती ।

पंद्रहवी-सोलहवीं शताब्दी मे मदन-मोहनजी, गोविन्ददेवजी, गोपीनाथजी, राधाबल्लभजी, आदि मंदिरों का निर्माण हो चुका था । औरंगजेब के शासन के समय जब वृन्दावन ही नहीं, ब्रज मण्डल के अनेक मन्दिरों को नष्ट किया जा रहा था तब वृन्दावन के अनेक श्रीविग्रहों को जयपुर आदि अन्यान्य स्थानों को भेज दिया गया था । वृन्दावन का नाम मोमिनाबाद रखने का प्रयत्न किया जो प्रचलित न हो सका और सरकारी कागजातों तक सीमित रहा ।

सन् 1718 ई० सं० 1803 तक तो ब्रजमण्डल में जाट राजाओं का आधिपत्य रहा, लेकिन सन् 1757 ई० में अहमदशाह ने ब्रज मण्डल के मथुरा, महावन आदि तीर्थस्थलों के साथ वृनदावन में भी लूटपाट की थी । सन् 1801 ई० के अन्तिम काल में ब्रज मण्डल के अनेक क्षेत्रों पर फिर हुकूमत हो गई । उसके बाद ही वृन्दावन को पुन: प्रतिष्ठित होने का अवसर मिला।

वृन्दावन में ठहरने के स्थान

वृन्दावन में अनेक धर्मशालायें हैं । इनमें प्रमुख निम्न हैं-

मिर्जापुर वालों की-पंचायती गौशाला के पास ।
दिल्ली वालों की धर्मशाला-लोई बाजार में ।
बसंती बाई की धर्मशाला-लोई बाजार में ।
हाथरस वालों की-बाँकेबिहारी मन्दिर के पास ।
किशनदास अमृतसर वालों की-प्रोहित पाड़ा ।
नन्द भवन धर्मशाला-प्रोहित पाड़ा ।
भिवानी वाली धर्मशाला-प्रोहित पाड़ा ।
केड़िया वाली धर्मशाला-बिहारीपुरा ।
फिरोजपुर वाली धर्मशाला-बिहारीपुरा ।
छपरिया वाली धर्मशाला-बिहारीपुरा ।
रास वालों की धर्मशाला-रंगजी मन्दिर के पास ।
अग्रवाल धर्मशाला-शाहजी मन्दिर के पास ।
जयकृष्ण की धर्मशाला-ज्ञान गूदड़ी पर ।

इनके अलावा कुछ गलियों में तथा मन्दिरों के पास भी धर्मशालायें हैं ।

वृन्दावन के आश्रम

वृन्दावन में अनेक आश्रम हैं, जिनमें मुख्यतः हैं ।

श्रोतमुनि आश्रम	फोगला आश्रम
सन्त निवास	मानव सेवा संघ
आनन्दमयी माँ का आश्रम	रघु आश्रम
कलाधारी का बगीचा	परमहंस आश्रम
काठिया बाबा का आश्रम	श्रीहित आश्रम
अनूपयति आश्रम	भारत सेवा आश्रम
गौडियामठ आश्रम	नारायण आश्रम

स्वामी हरिदास आश्रम — सुखदा भक्ति आश्रम
सुदामा कुटी — पागल बाबा आश्रम

इन सभी के अलावा जैपुरिया भवन, अन्तर्राष्ट्रीय अतिथिगृह, मोदी भवन, स्वामी साक्षीजी का आश्रम हैं । इनमें भी यात्रियों के लिए आधुनिक सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण ठहरने के लिये व्यवस्था है ।

प्रसिद्ध धार्मिक स्थल

सनोरख-यह मुनि श्रेष्ठ सौरभ की तपस्या स्थली है ।

कालीदह-यमुना किनारे का वह भाग है जहाँ पर कालिया नाग रहता था । उसका मान-मर्दन करने को भगवान श्रीकृष्ण कदम्ब पर से जमुना में कूदे थे ।

द्वादस आदित्य टीला-काली नाग का दमन कर जब भगवान जल से निकलकर इस टीले पर आये तो ठण्ड से काँपने लगे । तब सूर्य ने द्वादस कला धारण कर भगवान श्रीकृष्ण को गर्मी पहुँचाकर शीत का निवारण किया । चैतन्य सम्प्रदाय के सनातन गोस्वामी ब्रज में आने पर इसी स्थान पर ठहरे थे और वहीं उनको स्वप्न दिखाई दिया था ।

अद्वैतवट-इस स्थान पर अद्वैत स्वामी तपस्या करते थे । कालान्तर में जब चैतन्य महाप्रभु ब्रज में आये तो उन्होंने भी इसी वट के नीचे निवास किया था ।

श्रृंगार वट-यहाँ सखाओं ने भगवान का विविध प्रकार से श्रृंगार किया था । तभी से यह स्थान इस नाम से प्रसिद्ध है । चैतन्य वंशीय नित्यानन्द गोस्वामी ने यहाँ वास किया और उनके परिवारी जनों का तभी से इस स्थान पर अधिकार चला आ रहा है ।

सेवाकुञ्ज-इसको निकुञ्जवन भी कहते हैं । अहाते के

अन्दर यह छोटा-सा वन है । यहाँ एक ताल और एक कदम्ब का पेड़ है । कौने में एक छोटा-सा मन्दिर है । कहा जाता है कि रात्रि को यहाँ भगवान श्रीकृष्ण राधाजी के साथ विहार करते हैं। यहाँ रात्रि को रहना वर्जित है ।

चीर घाट-यमुना के किनारे इस घाट का महत्व इसलिये अधिक है कि भगवान श्रीकृष्ण ने यमुना में नग्न स्नान करती गोपियों के वस्त्र हरण किये थे ।

रास मण्डल-चैतन्य मतावलम्बियों का यह कथन है कि भगवान ने यहाँ रास किया था ।

किशोर वन-सेवाकुञ्ज व निधिवन की भाँति है और श्री हरिराम व्यास की साधना स्थली है ।

निधि वन-धारणा है कि श्रीकृष्ण और राधा यहाँ विहार करते थे । स्वामी हरिदासजी यहीं पर निवास करते थे और यहीं उनको बाँकेबिहारी जी की मूर्ति प्राप्त हुई, जो मन्दिर में है । श्री हरिदास जी की समाधि यहीं है ।

धीर समीर-भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का पावन-स्थल है ।

बंशीवट-यहाँ पुरातन वट वृक्ष है । कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण गोपियों को रास के लिये बुलाने को यहाँ खड़े होकर बंशी बजाते थे ।

ब्रह्म कुण्ड-इस कुण्ड के ऊपर ब्रह्माजी ने तपस्या की थी। पास ही अशोक का एक वृक्ष है । वैशाख शुक्ला द्वादशी को मध्यान्ह के समय उसमें एक फूल खिलता है, लोग उसके दर्शन करते हैं ।

वेणुकूप-भगवान श्रीकृष्ण ने राधाजी की प्यास बुझाने के लिये बांसुरी से कूप का निर्माण किया था ।

दावानल कुण्ड-कालिया दमन के अवसर पर भगवान

श्रीकृष्ण ने यहाँ दावाग्नि का पान किया था ।

ज्ञान गुदड़ी-कहा जाता है कि जब उद्धवजी श्रीकृष्ण का संदेश लेकर आये थे, तब उनकी गोपियों से इस स्थान पर वह ज्ञान-वार्ता हुई थी ।

इमली तला-पहली बार श्री चैतन्य महाप्रभु वृन्दावन पधारे थे तो इमली के इसी वृक्ष के नीचे ही बैठे थे ।

राधा बाग-श्री रंगनाथजी के बगीचे के समीप है जहाँ कात्यायनी देवी का भव्य मन्दिर है ।

टटिया स्थान-श्री हरिदासजी की शिष्य परम्परा का स्थान है । राधाष्टमी के दिन यहाँ अच्छा मेला लगता है ।

उपरोक्त स्थलों के अतिरिक्त केशीघाट, राधा बाबड़ी, बेलवन, मानसरोवर, महाप्रभुजी की बैठक, स्वामी हरिदास की बैठक, चौंसठ महन्तों की समाधि, मानस मन्दिर, रामबाग, यमुना मन्दिर, वन चन्द्र ज़ी का डोल, टोपी वाली कुञ्ज आदि अनेक स्थल दर्शनीय हैं ।

प्रसिद्ध दर्शनीय मन्दिर

वृन्दावन में अनगिनत मन्दिर हैं और यदि कहा जाय कि वृन्दावन मन्दिरों का ही नगर है तो यह गलत नहीं होगा । यों तो सभी ठाकुर द्वारे अपने-अपने महत्व तथा विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध होते हैं फिर भी हम कुछ मुख्य मन्दिरों का वर्णन कर रहे हैं ।

श्री गोविन्ददेवजी का मन्दिर

यह अति प्राचीन विशाल मन्दिर नगर पालिका से रंगजी के मन्दिर जाने से पूर्व बांयी ओर है जो लाल पत्थर का बना हुआ है। इसे जयपुर के महाराज मानसिंह ने बनवाया था । कहते हैं

कि यह सात मंजिल का था । इसकी चार मंजिल बादशाही सेना द्वारा गिरा दी गई थीं । औरंगजेब जब ब्रज मण्डल में मन्दिरों को नष्ट कर रहा था, उस समय यहाँ की मूर्ति जयपुर पहुँचा दी गई। वहाँ गोविन्ददेव के नाम से आज भी प्रमुख मन्दिर है ।

यह मन्दिर अब सरकार के पुरातत्व विभाग के संरक्षण में है । इसी मन्दिर के पीछे गोविन्दजी का नया मन्दिर है । मूर्ति मनोहर और दर्शनीय है ।

रंगजी का मन्दिर

यह विशाल और दक्षिणी स्थापत्य कला की एक सुन्दर कृति वाला मन्दिर सेठ लक्ष्मीचन्द के भाई सेठ राधाकृष्ण और गोविन्ददास ने बनवाया था । मन्दिर सात वर्षों में 1825 ई० के लगभग बनकर तैयार हुआ था । मन्दिर के सात परकोटे हैं । शिखर अत्यन्त भव्य है । विशाल आंगन, सोने का साठ फुट ऊँचा खम्भा, बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ इस मन्दिर की विशेषताएँ हैं । चैत्र मास में रथ का मेला, श्रावण में हिंडोले, रक्षाबन्धन पर गज-ग्राह का मेला, भादों में जन्माष्टमी उत्सव, लट्ठे का मेला तथा पौष में बैकुण्ठ उत्सव आदि रंगजी मन्दिर पर देखने योग्य मेले लगते हैं ।

काँच का मन्दिर

रंगजी मन्दिर के पूर्वी द्वार पर स्थित बिजावर महाराज का काँच का मन्दिर दर्शनीय है ।

गोदा बिहार

यह मन्दिर रंगजी के पास है । इस मन्दिर में सैकड़ों देवी-देवताओं, ऋषियों-मुनियों, सन्त-महापुरुषों की दर्शनीय

मूर्तियाँ शोभायमान हैं ।

राधा गोपालजी का मन्दिर

यह मन्दिर अपने गुरु-गिरधारी ब्रह्मचारी के उपदेश से ग्वालियर के महाराज जिवाजीराव सिंधिया ने सन् 1860 में कई लाख रुपये लगाकर बनवाया था । इसमें ब्रह्मचारीजी निवास करते थे तभी यह ब्रह्मचारी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है ।

राधारमणजी का मन्दिर

श्री राधारमणजी स्वयं प्राकट्य भगवान हैं । इस मन्दिर में मांगलिक दर्शन प्रात: 5 बजे होते हैं । रंगजी के द्वार से पश्चिम की ओर में जाने पर यह मन्दिर स्थित है । इस मन्दिर की पूजा-सेवा गोस्वामियों के पास है ।

गोपेश्वर का मन्दिर

जब श्रीकृष्ण महारास करते थे तो उसमें पुरुष मात्र के आने की आज्ञा नहीं थी, परन्तु महादेवजी को इस आनन्द को देखने की इच्छा हुई तब गोपी का रूप धारण कर उस आनन्द को देखने लगे । श्रीकृष्ण को मालूम हो गया । श्रीकृष्ण ने महादेवजी को गोपीश्वर नाम से पुकार कर अपने पास बुलाया था ।

युगलकिशोर का मन्दिर

यह मन्दिर केशीघाट पर ठाकुर नानकरण चौहान का बनवाया हुआ है । यह मन्दिर जहांगीर बादशाह की अमलदारी में सम्वत् 1664 में बनवाया गया था । इस मन्दिर का जगमोहन 32 फुट वर्गात्मक है । मन्दिर की मूर्ति मनोहर और दर्शनीय है ।

शाह बिहारी जी का मन्दिर

यह मन्दिर रेतिया बाजार में यमुना तट पर बना हुआ है। इसको लखनऊ के सुप्रसिद्ध शाह बिहारी लाल के पुत्र शाह कुन्दनलाल ने बनवाया था। यह जन साधारण में शाहजी मन्दिर के बजाय टेंढ़े-मेढ़े खम्भों वाला मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। वास्तव में इसका नाम ललित कुञ्ज है। यहाँ बसन्त पंचमी पर मेला लगता है।

सवामन सालिग्रामजी का मन्दिर

लोई बाजार में यह मन्दिर सवा मन के सालिग्राम के नाम से प्रसिद्ध है। मन्दिर बहुत बड़ा नहीं है, परन्तु मूर्ति अवश्य दर्शनीय और आश्चर्यजनक है।

मदनमोहनजी का मन्दिर

श्री सनातन गोस्वामी को मथुरा के एक चौबे ने श्रीमदनमोहनजी की एक मूर्ति माघ शुक्ला तृतीया को लाकर दी जिसे देखकर गोस्वामी बहुत प्रसन्न हुए और उसे कालीदह के निकट द्वादश टीले पर स्थापित कर दिया और आप एक मढ़ी बनाकर रहने लगे।

श्री बाँके बिहारीजी का मन्दिर

स्वामी श्री हरिदासजी द्वारा निर्मित यह मन्दिर वृन्दावन के प्रमुख मन्दिरों में से एक है। श्री बिहारीजी के चरण दर्शन केवल अक्षय तीज को होते हैं। सावन मास में सोने के हिंडोले के दर्शन होते हैं तथा फाल्गुन के महीने में होली होती है। मूर्ति

बहुत चमत्कारी है। मन्दिर का यह श्रीविग्रह निधिवन से प्रा
हुआ था। मन्दिर प्रात: 9 बजे खुलकर 1 बजे बन्द होता है
पुन: सायं 6 बजे से 9 बजे तक दर्शन खुलते हैं। समय-सम
पर दर्शन होते हैं तथा भोग व झाँकियाँ होती हैं।

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर (अंग्रेजों का मन्दिर)

रमणरेती स्थित वृन्दावन-दिल्ली रोड पर वन महाराज
कालेज के ठीक सामने सड़क पर ही है। मन्दिर में त
सन्निधियाँ हैं। प्रथम दाँई और श्री गौरनिताई, द्वितीय में
कृष्ण बलराम, तृतीय में श्री राधाकृष्ण युगल ललिता विशा
सहित हैं। द्वार से प्रवेश करते ही फब्बारों की लाइन और प्रां
में एक तमाल वृक्ष है। यह मन्दिर तथा अतिथि भवन श्रीकृ
भावना संघ द्वारा निर्मित हुआ हैं जिसने विदेशों में अनेकों मन्दि
का निर्माण कराया है। यहाँ अनेकों अमरीकन भक्त वैष्ण
धर्म में दीक्षित होकर निवास करते हैं। इस मन्दिर में निर्मा
कार्य अभी भी चल रहा है।

श्रीजानकी बल्लभलाल भगवान का मन्दि

इस मन्दिर का निर्माण श्री वेदान्त देशिक आश्रम के द्वा
केशीघाट पर हुआ है। यह मन्दिर रामानुज के बड़कले शा
से सम्बन्धित है। प्रतिष्ठापक हैं परमहंस स्वामी भगवान
आचार्य। मन्दिर में संगमरमर का प्रयोग हुआ है तथा शिख
भाग विशाल एवं शास्त्रोक्त है। इसमें श्रीराम, लक्ष्मण ए
माता जानकी के दर्शन हैं।

श्रीपागल बाबा का मन्दिर

मथुरा वृन्दावन रोड पर टी.वी. सेनेटोरियम से पहले हाइडल सब स्टेशन के समीप लीला बाग में यह भव्य मन्दिर अभी निर्माणावस्था में है । इसी वृन्दावन ज्ञान गुदड़ी में रहने वाले पागल बाबा नाम से प्रसिद्ध एक सन्त ने दानी उद्योगपतियों के सहयोग से बनवाया था । इनकी निर्माण शैली ब्रज में अन्य मन्दिरों से अलग है । शिखर काफी ऊँचा है और समस्त मन्दिर एवं बाग काफी क्षेत्र में फैला हुआ है । इसके एक मन्दिर में एक कुण्ड भी बना है ।

राधा वल्लभजी मन्दिर

हित हरिवंश गोस्वामियों का यह मन्दिर प्राचीन है । यहाँ भगवान के साथ राधाजी की गद्दी नहीं विराजती है ।

जयपुर वाला मन्दिर

यह मन्दिर रामकृष्ण मिशन अस्पताल के सामने है जो काफी विशाल क्षेत्र में बना है ।

मान सरोवर

मान सरोवर वृन्दावन से जमुना पार पर स्थित है । राधारानी का भव्य मन्दिर शोभायमान है तथा प्रतिवर्ष फाल्गुन कृष्णा एकादशी को भव्य मेला लगता है तथा राधारानी मन्दिर की बांयी ओर बड़ी हित हरिवंश महाप्रभु की भजन स्थली है । दर्शनार्थी प्रति माह की पूर्णिमा को दर्शन करने के लिये आते हैं।

अक्रूर मन्दिर

अक्रूर मन्दिर में श्रीकृष्ण बलराम एवं स्वयं अक्रूरजी के

दर्शन हैं । यह मन्दिर परिक्रमा में आई. टी. आई. स्कूल के पीछे है । वृन्दावन रोड पर गौशाला के बराबर से मार्ग जाता है । पहले वाला कच्चा मार्ग अब पक्का डामर रोड मन्दिर तक बन गया है । श्री अक्रूरजी वार्ष्णेय बारहसैनी वैश्यों के पूर्वज हैं ।

राधाबल्लभजी का प्राचीन मन्दिर कोड़िया घाट पर स्थित है । जिसके अवशेष आज भी मिलते हैं । श्री अनन्त बाँके बिहारी मन्दिर-सिंधी कालोनी में स्थित यह मन्दिर स्वामी हरिमिलाप जी का बनवाया हुआ है । श्रीजी मन्दिर-निम्बार्क संप्रदाय का यह विशाल मन्दिर रेतिया बाजार में स्थित है । यहाँ ठाकुर जी आनन्द मनोहरजी के दर्शन हैं । श्रीसर्वेश्वर नाम से मासिक पत्रिका का प्रकाशन होता है । मन्दिर का जीर्णोद्धार जयपुर की राजमाता श्री आनन्दकुँवरजी ने कराया था । कानपुर वाला मन्दिर-आनन्द वृन्दावन के निकट कानपुर के पद्मपति सिंहानिया द्वारा निर्मित है । मानस मन्दिर-श्री रंगजी के मन्दिर के समीप है ।

गोपीनाथजी का मन्दिर-सन् 1646 ई० के लगभग निर्मित यह मन्दिर गौड़ीय सम्प्रदाय से सम्बन्धित है । मीराबाई का मन्दिर-शाह बिहारीलाल के मन्दिर के समीप है । नन्द भवन-यमुना के किनारे पर है, जहाँ नन्दोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया जाता है ।

रसिक बिहारी मन्दिर-यह हरिदासी परम्परा के आचार्य रसिक दास जी द्वारा निर्मित मन्दिर है । गोरे दाऊजी का मन्दिर-श्री रसिक दास जी द्वारा निर्मित मन्दिर है । गोरे दाऊजी का मन्दिर-श्री रसिकदासजी के शिष्य श्री गोविन्ददासजी द्वारा निर्मित है । अष्टसखी मन्दिर-इसका निर्माण संवत् 1943 में हेतमपुर महाराज द्वारा हुआ । आनन्द वृन्दावन-स्वामी अखण्डानन्दजी की प्रेरणा पर नगर से दूर शान्त व्रातावरण में इस रमणीक मन्दिर की स्थापना हुई है ।

गोवर्धन

मथुरा से पश्चिम में डीग-अलवर मार्ग पर गोवर्धन लगभग 24 किमी. है । यह वैष्णवों का विश्व प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है । यहाँ गोवर्धन नामक पर्वत है जिसकी सेवा-पूजा साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमूर्ति के रूप में की जाती है । पर्वत की लम्बाई 7 किमी. के लगभग है । इसकी परिक्रमा करने देश-विदेश से धार्मिक जन वर्ष पर्यन्त आते हैं, किन्तु हर मास की पूर्णिमा, पुरुषोत्तम मास के सभी दिनों, मुड़िया पूनों तथा सावन भादों व लोंद के महीनों में तो परिक्रमा का विशेष महत्व होने से लाखों नर-नारी और बच्चे इसकी परिक्रमा करते हैं । अनेकों श्रद्धालु दूध की धार और दण्डौती परिक्रमा भी लगाते हैं और मनौती मानते हैं । यह अच्छा कस्बा है और यहाँ अनेकों धर्मशालाएँ व यात्री-निवास हैं ।

मानसी गंगा

मानसी गंगा भगवान श्रीकृष्ण के स्नान के लिये जो 'आकाश गंगा' का जल गिरा था, उससे प्रगट हुई बतलाते हैं । यह गोवर्धन नगरी के बीचों-बीच काफी बड़े क्षेत्र में है । इसके चारों ओर पक्के घाट और अनेक मन्दिर बने हैं । दीपावली के दिन यहाँ दीपदान-दीपमालिका की अपूर्व छटा देखने सहस्त्रों यात्री आते हैं ।

श्री गंगाजी का मन्दिर

मानसी गंगा के किनारे यह पुष्टि मार्गीय मन्दिर है ।

गिरिराज मुकुट मन्दिर (मुखारविन्द)

मानसी गंगा पर ही गोवर्धन के मुखारविन्द के दर्शन हैं । यहाँ दूध चढ़ाकर भोग लगाया जाता है । यहाँ यम, कुवेर आदि

की प्राचीन शिला-प्रतिमाएँ भी हैं ।

यह मन्दिर कार्ष्णि सम्प्रदाय के महामंडलेश्वर स्वामी गुरु शरणानन्दजी के सहयोग से नवीनता को प्राप्त हुआ है । इस मन्दिर के पुनः निर्माण के पश्चात् सन् 1993 में वास्तु प्रतिष्ठा, शिखर पर महाध्वज दण्ड तथा स्वर्ण कलश की स्थापना हुई थी।

चक्रेश्वर महादेव

यह मानसी गंगा के उत्तरी सिरे पर एक प्राचीन शिव मन्दिर है जिसे 5000 वर्ष पूर्व महाराज बज्रनाभजी ने निर्माण कराया था । समीप ही चैतन्य महाप्रभु का मन्दिर, श्री महाप्रभु जी की बैठक है । यहीं सनातन गोस्वामी की भजन स्थली भी है ।

श्री हरदेवजी का मन्दिर एवं ब्रह्मकुण्ड

यह एक प्राचीन मन्दिर है जो मानसी गंगा के समीप ही लाल पत्थरों का बना है । इसे 5000 वर्ष पूर्व श्रीबज्रनाभजी द्वारा प्रतिष्ठित किया गया था । औरंगजेब ने इस मन्दिर को तुड़वाया था जिससे अब इसकी एक मंजिल ही शेष है । चैत्र कृष्णा 2 को ठाकुर हरदेवजी की सवारी निकाली जाती है। पास में ही ब्रह्मकुण्ड है जहाँ ब्रह्माजी ने श्रीकृष्ण जी की स्तुति की थी ।

मंसादेवी का मन्दिर

यह मन्दिर मानसी गंगा के समीप ही है और मानसी गंगा की तरह ही प्राचीन है । प्रतिमा का प्राकट्य गिरिराज शिला में से ही है। पहले यह मन्दिर काफी भव्य था किन्तु औरंगजेब द्वारा इसको नष्ट कर देने के बाद साधारण ढंग से ही बना दिया गया है ।

दानघाटी

मथुरा से डीग जाने वाले मार्ग पर ठाकुर दानबिहारी लालजी का मन्दिर है । इसी को श्री गोवर्धन नाथ मन्दिर भी कहते हैं । यहाँ मुखारबिन्द के दर्शन हैं । मन्दिर में अब नवीन शैली में निर्माण कार्य चल रहा है ।

भरतपुर महाराज की छतरियाँ

गोवर्धन धाम से भरतपुर के शासकों का बहुत लगाव रहा है । यहाँ उनके द्वारा निर्मित रानी किशोरी जी के महल श्रीगिरिराज मुखारबिन्द मन्दिर तथा छतरियाँ दर्शनीय हैं ।

अन्य दर्शनीय स्थल व मन्दिर

इनके अलावा हाथी दरवाजे पर विश्वकर्माजी का मन्दिर, रामलीला मैदान के पास श्री नन्दबाबा का मन्दिर, श्री गिरिराज मुकुट मन्दिर के पास लक्ष्मीनारायण जी का मन्दिर, बड़ा बाजार में दाऊजी का मन्दिर, भरतपुर की छतरियों के पास किशोरी श्यामजी का मन्दिर एवं लक्ष्मीनारायण का नया मंदिर बाजार में है । ऋण मोचन कुण्ड, पाप मोचन कुण्ड, सिद्ध बाबा का मन्दिर, निवृत कुण्ड आदि अन्य अनेकों कुण्ड व मन्दिर गोवर्धन में हैं ।

गोवर्धन की परिक्रमा के तीर्थस्थल

श्री गिरि गोवर्धन और श्री यमुना भगवान् श्रीकृष्ण के समय की साक्षी हैं । श्री गिरिराज तो जन-जन के देवता हैं । इनकी परिक्रमा पर ब्रजवासी ही नहीं दूर-दूर से आने वाले श्रद्धालु जन अपने को धन्यभाग मानते हैं ।

परिक्रमा करते समय मार्ग में अनेकों मन्दिर व कुण्ड आदि आते हैं । इसमें से जो मुख्य हैं, हमने उनको ही यहाँ दिया है ।

आन्यौर

परिक्रमा मार्ग में गिरिराज जी की तलहटी में यह प्राचीन गाँव बसा हुआ है । यहाँ महाप्रभु बल्लभाचार्य पधारे थे । कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने इसी स्थान पर गोवर्धन-पूजा ब्रजवासियों से कराई थी । सद्दू पांडे का घर, महाप्रभुजी की बैठक, श्रीनाथ जी का मंदिर पर्वत शिखर पर कुंभनदास की समाधि संकर्षण कुण्ड के किनारे, दाऊजी का मन्दिर, गौरी कुण्ड आदि सरोवर यहीं हैं ।

गोविन्द कुण्ड

देवराज इन्द्र ने हार मानकर श्रीकृष्णजी को कामधेनु गाय के दूध से स्नान कराया था और उन्हें गोविन्द कहकर पुकारा था। पर्वत के मध्य शिलाओं में श्रीकृष्णजी की छड़ी, टोपी आदि हैं । यहाँ गोविन्दजी का मन्दिर, गौघाट पर श्रीनाथजी का मन्दिर, श्री विट्ठलनाथ जी और नागाजी की बैठकें दर्शनीय हैं। इसके बाद परिक्रमा मार्ग में ही गन्धर्व कुण्ड, टोका दाऊजी का मन्दिर तथा सात कन्दरायें हैं ।

पूछरी का लौठा

गोवर्धन श्रेणी यहाँ आकर अलोप हो जाती है और परिक्रमा जतीपुरा की ओर मुड़ जाती है यहीं पर पूछरी गाँव और पूछरी के लौठा का मन्दिर है । यह हनुमानजी का ही एक स्वरूप है जिन्हें

माखन लूटने को श्रीकृष्णजी ने बिठाया था । समीप ही अप्सरा कुण्ड, टीले पर नृसिंहजी का मन्दिर, नवल बिहारी का मन्दिर, गोपाल तलैया आदि और गिर्राजजी की तलहटी में इन्द्रकुण्ड तीर्थ, सुरभि कुण्ड, चरण शिला, ऐरावत कुण्ड और हरजी कुण्ड भी हैं ।

जतीपुरा

जतीपुरा गोवर्धन की तलहटी में पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय का केन्द्र है । यहाँ मुखारविन्द के दर्शन हैं । महाप्रभुजी व गोकुलनाथजी की बैठकें हैं । मोतीमहल, गिरिराज बाग, मदनमोहन जी का मन्दिर, श्रीनाथजी का प्राकट्य मन्दिर हैं जो दर्शनीय हैं । यहाँ मुखारबिन्द पर दूध व भोग चढ़ाया जाता है ।

जतीपुरा से आगे, सूर्यकुण्ड, बिलछ कुण्ड, दंडौता हनुमान मन्दिर और राधाकुंड की ओर बढ़ने पर लुटेरा हनुमान व उद्धव कुण्ड है । राधाकुंड में प्रवेश करने पर शिव पोखर, मलिहारी कुंड, भानोखर, कुंजबिहारी मठ, गोविन्द मन्दिर, गिर्राजजी की जिह्वा, पाँच पाँडव घाट, हरिवंशराय की बैठक, ललिताकुंड, गोपकुआ, अष्टसखी के मन्दिर हैं ।

राधाकुण्ड-कृष्णकुण्ड

राधाकुण्ड की बस्ती इस कुण्ड के नाम पर ही है । श्री राधाकृष्ण का प्रधान विहार स्थल है । यहाँ बराबर-बराबर दोनों कुण्ड हैं तथा दोनों का जल स्तर एक ही है ।

कुसुम सरोवर

यह विशाल सु... सरोवर राधाकुण्ड से गोवर्धन के मार्ग

में है । यहाँ श्री श्यामसुन्दर ने श्री किशोरीजी का पुष्पों से श्रृंगार किया था । यह सफेद पत्थर का रमणीक विशाल सरोवर है जिसे भरतपुर के महाराज जवाहर सिंह ने बनवाया था । पक्के घाट और उन पर बनी सुन्दर छतरियाँ हैं जिनमें सुन्दर चित्रकारी की हुई है । समीप ही उद्धवजी की बैठक और दाऊजी का मन्दिर है । नारद कुण्ड पर नारदजी ने तपस्या की थी ।

पारासौली-चंद्र सरोवर

जमुनावत गाँव के बाद पारासौली स्थान है जहाँ चन्द्र सरोवर और सूरदास जी की कुटी है । पास ही श्रृंगार मन्दिर, रासमंडल, बल्देवजी का प्राचीन मंदिर और संकर्षण कुण्ड है । चन्द्र सरोवर बहुत सुन्दर पक्का अष्टकोण रूप में निर्मल जल से परिपूर्ण रहता है । जमुनावत गाँव ब्रजभाषा कवि कुंभनदास का निवास-स्थल था । पारासौली सूरदासजी की जन्मस्थली कही जाती है । श्रीनाथजी का जलघड़ा, इन्द्र के नगाड़े, रासलीला का स्थान है । महाप्रभु बल्लभाचार्य जी ने यहाँ भागवत का पारायण किया था ।

नींव गाँव

यह गोवर्धन-बरसाना मार्ग पर निम्बार्क सम्प्रदाय का एक प्रमुख स्थल है । यह श्री निम्बार्काचार्य जी की तपस्या स्थली है। गाँव में भव्य मंदिर का निर्माण हो गया है । जहाँ यह गाँव है, पहले यह एक घना वन खंड था ।

बरसाना

यह मथुरा से गोवर्धन होकर लगभग 42 किमी. और कोसी

से गोवर्धन मार्ग पर 21 किमी. है । यह भगवान श्रीकृष्ण की आहलादिनी शक्ति श्री राधा जी का गाँव है । पर्वत की दो श्रेणियों के बीच के समतल स्थान में बरसाना गाँव बसा हुआ है। दोनों पर्वत मिलकर एक नाव की शक्ल बनाते हैं । पर्वत जहाँ मिलते हैं, उस जगह को साँकरी खोर कहते हैं । दोनों पर्वत श्रेणियों में एक श्याम रंग के पत्थरों की है और दूसरी सफेद पत्थरों की । इस तरह ये राधाकृष्ण के स्वरूपों का भी प्रतीक है । इन पर्वत श्रेणियों के चार शिखर मानगढ़, मोर कुटी, विलासगढ़ और दानगढ़ हैं । बरसाना अब अच्छा कस्बा बन गया है । यहाँ के बाजार में खाने-पीने की सभी चीजें मिल जाती हैं तथा यहाँ यात्रियों के ठहरने को धर्मशालाएँ भी हैं । इसका प्राचीन नाम वृषभानपुर और वृहत्सानौ है । श्रीवृषभानुजी राधाजी के पिता थे और उनके वंशज राजा वृहत्सैन हुए हैं । यहाँ ब्रजयात्रा का पड़ाव होता है । यहाँ राधारानी का मन्दिर, राधिकाजी का महल । जयपुर वाला मन्दिर दानगढ़ पर है । चित्र-विचित्र शिलाएँ देखने योग्य हैं । गाजीपुर में राधागोपाल जी का विशाल भव्य मन्दिर है जिसके पीछे प्रेम सरोवर है । अष्ट सखी मन्दिर, भानोखर, कीर्ति कुण्ड, मुक्ताकुण्ड, पीरी पोखर, वृषभानु मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल हैं ।

बरसाने की प्रसिद्ध लठामार रंगीली होली फाल्गुन शु. 9 को होती है, जिसे देखने हजारों नर-नारी देश-विदेश से आते हैं।

संकेतवन

श्री राधाकृष्ण के प्रथम-मिलन का स्थल संकेत वन बरसाने से 2 किमी० दूर है । यहाँ संकेत वट, संकेत कुण्ड, राधारमणजी,

विह्वला देवी, संकेत बिहारी के मन्दिर हैं । रासमंडल चबूतरा, रंगमहल एवं चैतन्य महाप्रभु और श्री बल्लभाचार्य की बैठकें हैं।

रीठौरा

यह रीठौरा गाँव चन्द्रावली सखी का जन्म स्थल है । चन्द्रावलि कुण्ड और गो० विट्ठलनाथ जी की बैठक है ।

नन्दगाँव

यह भगवान श्रीकृष्ण का गाँव है । नन्दजी का भवन ऊपर पहाड़ी पर है । यह पहाड़ी शिव का रूप मानी जाती है । मन्दिर के नीचे ढलान पर गाँव बसा हुआ है । श्रीकृष्ण-बलराम के साथ नन्दबाबा और यशोदा रोहिणी जी की सुन्दर मूर्तियाँ हैं । बाँई ओर राधारानी की मूर्ति है और दाईं ओर श्रीदामा सखा आदि मूर्तियाँ विराजती हैं । मन्दिर का विशाल जगमोहन है । जहाँ फागुन शु० 10 को बरसाने के हुरियारे होली खेलते हैं । पान सरोवर, श्री बल्लभाचार्य जी की बैठक, श्री रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी की कुटिया, मोती कुंड, श्याम पीपरी, टेर कदम्ब, यशोदा कुंड, नन्द पोखरा, नन्दीश्वर महादेव, जल बिहार, छाछ कुण्ड, छछियारी देवी आदि मन्दिर और भगवान श्रीकृष्ण की लीला स्थली है ।

कोकिला वन

यहाँ कोकिला कुण्ड, कोकिला बिहारी, कृष्ण कुंड, महाप्रभुजी की बैठक है । यहाँ शनिवार को शनिदेव के मन्दिर

पर हजारों स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ आते हैं । कहते हैं कि यहाँ शनिदेव ने राधाकृष्ण के दर्शनों की इच्छा से भारी तपस्या की थी । यहाँ मोर बहुत हैं । वन में असंख्य भ्रमर गुंजार करते हैं । यहाँ महारास के समय भगवान् राधाजी के साथ अन्तर्ध्यान होकर आये थे किन्तु राधाजी के मन में अभिमान होने से उन्हें अकेली छोड़कर चले गये । विलाप करती हुई राधाजी को उनकी सखियाँ यहाँ मिली थीं, ऐसा कहा जाता है । यह भी कहा जाता है कि श्याम सुन्दर ने अपनी बंशी से कोयल का स्वर निकाल कर राधाजी को भ्रमित एवं चकित किया था । बड़ी व छोटी बठैन, बैंदोखर, कामर, कोसी, शेषशायी, पैगाँव, शेरगढ़, बिहारवन आदि इसी ओर की लीला स्थलियाँ हैं । यहाँ ब्रज यात्रा मुकाम करती हैं । वैसे साधारणतः यात्री आवागमन में कठिनाइयों के कारण नहीं आते हैं ।

डीग कामां आदि

इस स्थल की स्कन्द पुराण में दीर्घपुर नाम से तीर्थों में गणना की गयी है । यहाँ गोपाल भवन, सूरज भवन, केशव भवन, कृष्ण भवन, नन्द भवन आदि दर्शनीय हैं । यह इतिहास प्रसिद्ध स्थल है और राजस्थान प्रदेश के भरतपुर जिले के अन्तर्गत आता है । साक्षी गोपाल, गोवर्धन नाथ, लक्ष्मणजी के मन्दिर हैं। भादों में अमावस्या से फुँआरों का प्रसिद्ध मेला होता है ।

राजस्थान प्रदेश में आने वाले अन्य धार्मिक स्थल घाटा, कामां, परमदरा आदि हैं । इनमें कामां (कामवन) को आदि वृन्दावन बताया जाता है । यहाँ मदनमोहनजी, राधाबल्लभजी,

गोविन्दजी, नवनीत प्रियाजी, श्वेत वाराह, कामदेवी, कामेश्वरनाथ शिव मंदिर दर्शनीय हैं । यहाँ महा प्रभुजी व गोसाइयों की बैठकें होने से वैष्णवों के लिये इसका बहुत महत्व है । यहाँ गोपाल कुण्ड आदि कई कुण्ड हैं । समीप ही व्योमासुर की गुफा, खिसलनी शिला, चरण पहाड़ी, ललिताजी की बावड़ी भी हैं ।

यमुना पार के तीर्थ--स्थल

मथुरा से यमुनापार करके एक मार्ग राया, हाथरस व अलीगढ़ की ओर जाता है । मथुरा से एक मार्ग सादाबाद को जाता है । इस सादाबाद मार्ग पर लोहवन, आनन्दी-वन्दी, गोकुल, रावल, महावन ब्रह्माण्ड घाट, रमन रेती और बलदेव दाऊजी प्रसिद्ध तीर्थ स्थली हैं ।

लोहवन में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा लोहासुर का वध हुआ था । यहाँ लोहासुर की गुफा, कृष्ण कुण्ड, गोपीनाथ जी का मन्दिर है । आनन्दी-वन्दी दोनों नन्दराय जी की कुल देवियाँ कही जाती हैं । चन्द्रावली देवी का मन्दिर इसी मार्ग पर है । जहाँ हर सोमवार को भारी मेला लगता है ।

गोकुल

भगवान श्रीकृष्ण को आधी रात के जन्म के पश्चात् यमुनापार करके यहाँ लाया गया था । श्रीकृष्ण का नन्द यशोदा के यहाँ पालन हुआ । उन्होंने यहाँ बाल-लीलायें की और कंस के असुरों को मारा था । यहाँ बल्लभ सम्प्रदाय का एक प्रमुख केन्द्र है । यहाँ प्रभुजी की साधना स्थली रही थी । यहाँ गोकुल

नाथजी का मन्दिर, दाऊजी का मन्दिर आदि कई मन्दिर दर्शनीय हैं। यहाँ ठकुरानी घाट, यशोदा घाट आदि जमुना के घाट हैं। यह मथुरा से 10 किमी. दूर है।

रमण रेती-ब्रह्माण्ड घाट

यह महावन को जाने वाले कच्चे मार्ग पर है। ब्रह्माण्ड घाट स्थान पर बालक रूप श्रीकृष्ण ने मुख खोलकर ब्रह्माण्ड के दर्शन मैया को कराये थे। रमणरेती कार्ष्णि सम्प्रदाय का प्रमुख स्थान है। यह बहुत रमणीक स्थल है। कार्ष्णि स्वामी महामण्डलेश्वर गुरु शरणदास एक प्रसिद्ध सन्त यहाँ विराजमान हैं। यहाँ रमण बिहारी, रमणेश्वर महादेव एवं हनुमान जी के भव्य मन्दिर हैं।

रसखान की समाधि

कवि रसखान और अलीखान की समाधियाँ चौहट्टा टीले पर हैं। यमुना किनारे ताज बेगम की समाधि है। जो गो० विट्ठलनाथ की शरणागत भगवान श्याम सुन्दर की भक्ति में रम गयी थीं।

महावन

गोकुल से आगे 2 किमी. दूरी पर यह एक अच्छी प्राचीन बस्ती है। यहाँ के लोग अपने महावन को पुरानी गोकुल बताते हैं। यहाँ चौरासी खम्भों का मन्दिर, नन्देश्वर महादेव, नन्दभवन, पूतना उद्धार स्थल, यमलार्जुन मोक्ष स्थल, मथुरानाथ, द्वारिकानाथ आदि मन्दिर हैं।

बल्देव

महावन से 10 किमी. दूर सादाबाद मार्ग पर बल्देवजी का प्रसिद्ध मन्दिर है । नया मन्दिर लगभग 250 वर्ष पुराना है । क्षीर सागर कुण्ड से बल्देवजी की प्रतिमा मिली है । रेवती कुण्ड, मूर्ति कुण्ड और रेणुका कुण्ड हैं । 5000 वर्ष पूर्व बज्रनाभजी ने दाऊजी व रेवती जी की प्रतिमायें प्रतिष्ठित की थीं । मुसलमानों द्वारा मन्दिरों को नष्ट करने पर ये प्रतिमाएं धरती में दाब दी गयी थीं । यहाँ माखन मिश्री का भोग लगता है। फाल्गुन में दाऊजी का प्रसिद्ध हुरंगा तथा बल्देव छट का अच्छा मेला होता है ।

इनके अतिरिक्त रावल, कोइला घाट, चिन्ता हरण घाट, कर्णावल आदि लीला स्थली हैं ।

मान सरोवर, माँट भाँडीरवन आदि

वृन्दावन से यमुना पार नाव द्वारा अथवा अस्थायी पुल द्वारा इन लीला स्थलियों के दर्शनार्थ यात्री जाते हैं । मथुरा से नौहझील बसें जाती हैं । मार्ग में ये लीला स्थलियाँ पड़ती हैं । साधारणतः यात्री इन स्थानों को असुविधाओं के कारण नहीं जाते किन्तु ब्रज यात्रा वाले यात्री इनके दर्शन अवश्य पाते हैं ।

वृन्दावन से यमुनापार करके प्रसिद्ध सन्त देवरहा बाबा का आश्रम है, मानसरोवर, बेलवन, माँट भाँडीरवन यहाँ श्रीराधाजी अपने श्याम से रूठकर बैठ गई तो सुन्दर श्याम ने इनको मनाया था, पुष्पों से श्रृंगार किया था । मान सरोवर में

श्री राधाजी का मन्दिर है । महाप्रभु जी की बैठक मान सरोवर कुण्ड है । बेलवन में गुसाई जी की बैठक व लक्ष्मीजी का मन्दिर है ।

वच्छवन तथा बेलवन में भी गुसांईजी की बैठकें हैं । यहाँ अनेक प्रकार की लता-कुंज हैं । बेलवन से माँट जाते हैं । यहाँ मन्दिर में भगवान का गौरवर्ण का स्वरूप है ।

भांडीर वन मथुरा नौहझील मार्ग पर लगभग 28 किमी. है और भांडीर वन से भद्रवन 4 किमी. है । भांडीर वन प्रिया-प्रियतम का मिलन स्थल और भद्रवन श्रीकृष्ण तथा उनके सखाओं का क्रीड़ा स्थल बताया जाता है ।

पाठकों से निवेदन है कि इस छोटी सी पुस्तक में ब्रज के लीला स्थलों का केवल परिचय मात्र ही दिया जा सका है । विस्तार से जानकारी चाहने वाले जिज्ञासु पाठकों को बड़ी पुस्तक 'ब्रज गाइड' तथा अन्य ग्रन्थों का अवलोकन करना चाहिए ।

ब्रज के प्रमुख मन्दिरों के दर्शन का समय

श्री यमुनाजी की आरती विश्राम घाट, मथुरा

	ग्रीष्मकाल	शीतकाल
मंगला आरती	4.45 प्रात:	5.15 प्रात:
संध्या आरती	7.30 सायं	7.00 सायं

श्री द्वारिकाधीश मन्दिर, मथुरा

	(रामनवमी से देवोत्थान एकादशी)	(देवोत्थान एकादशी से रामनवमी)
मंगला	6.30 से 7.00 प्रात:	6.30 से 7.00 प्रात:
श्रृंगार	7.40 से 7.55 ,,	7.40 से 7.55 प्रात:
ग्वाल	8.25 से 8.40 ,,	8.25 से 8.40 ,,
राजभोग	10.00 से 10.30 ,,	10.00 से 10.30 ,,
उत्थान	4.00 से 4.20 सायं	3.30 से 3.50 सायं
भोग	4.45 से 5.05 ,,	4.20 से 4.40 ,,
संध्या आरती	5.20 से 5.40 ,,	4.40 से 5.15 ,,
शयन	6.30 से 7.00 ,,	6.00 से 6.30 ,,

श्रीकृष्ण जन्म-स्थान, मथुरा

मंगला आरती	5.30 प्रात:
मक्खन भोग	8.00 ,,
आरती	6.00 सायंकाल

दर्शन का समय 5.30 से 12.00 मध्याह्न व 2.00 से 8.30 रात्रि

बिड़ला मन्दिर, मथुरा

ग्रीष्मकाल	शीतकाल
5.00 प्रात: से 12.00 मध्याह्न	5.30 से 12.00 मध्याह्न
2.00 दोपहर से 9.30 रात्रि	2.00 से 8.30 रात्रि

श्री बाँके बिहारी मन्दिर, वृन्दावन

ग्रीष्मकाल	शीतकाल
प्रातः 9 से 12 मध्याह्न	10.00 से 1.00 मध्याह्न
सायं 7 से 10 रात्रि	6.00 से 9.00 रात्रि
श्रृंगार आरती 9.30 प्रातः	10.30 प्रातः
राजभोग आरती 12.00 मध्याह्न	1.00 मध्याह्न
शयन आरती 10.00 रात्रि	9.00 रात्रि

नोट - जन्माष्टमी के दिन मंगला दर्शन प्रातः 4 बजे होते हैं तथा सभी उत्सवों के दिन 1 घण्टा रात्रि में विशेष दर्शन होते हैं ।

श्रीरंग मन्दिर, वृन्दावन

दर्शन पट बन्द रहने का समय ग्रीष्म में 11 से 4 सायं
तथा शीतकाल में 12 से 3 सायं

5.50 प्रातः सुप्रभातम्	11.30 से 12.00 मध्याह्न गोष्ठी
6.00 प्रातः विश्वरूप दर्शन	विनियोग
6.30 प्रातः यमुना जल	6.00 से 6.30 सायं आरती
7.30 प्रातः मंत्रपुष्प अर्चन	7.00 से 7.30 भोग गोष्ठी
8.00 से 9.00 प्रातः भोग हवन आदि	7.30 से रात्रि आराधना
9.30 तक गोष्ठी, हवन, प्रसाद	8.30 रात्रि का भोग, बलि प्रदान
वितरण	9.00 बजे रात्रि शयन हो जाते हैं ।

श्रीकृष्ण-बलराम मन्दिर (रमणरेती), वृन्दावन

समाधि आरती	4.10 प्रातः	राजभोग	12.00 प्रातः
मंगला आरती	4.30 प्रातः	उत्थान	4.30 सायं
श्रीमद्भागवत प्रव.	6.30 प्रातः	संध्या आरती	7.40 सायं
श्रृंगार-दर्शन	7.30 प्रातः	गीता प्रवचन	7.30 सायं
गुरु पूजा	7.35 प्रातः	शयन आरती	8.30 सायं
पुष्प आरती	8.30 प्रातः		

श्री गोकुलनाथ मन्दिर, गोकुल

प्रातः 7.30 से 11.30 और सायं 3.30 से 5.00 तक ।

श्री दाऊजी मन्दिर, बल्देव

ग्रीष्मकाल में प्रातः 5.30 से 11.30 सायं 3.30 से 9.30
शीतकाल में प्रातः 6.30 से 11.30 सायं 4.00 से 8.00

शाहबिहारी लालजी मन्दिर, वृन्दावन

प्रातः 9.00 से 12.00 सायं 5.00 से 8.00

श्री राधाबल्लभजी मन्दिर, वृन्दावन

ग्रीष्मकाल में प्रातः 5.30 से 11.00 सायं 7.00 से 9.00
शीतकाल में प्रातः 6.30 से 12.00 सायं 6.00 से 8.30

श्रीजी मन्दिर, बरसाना

ग्रीष्मकाल में प्रातः 5.30 से 11.00 सायं 4.00 से 9.00
शीतकाल में प्रातः 6.30 से 11.30 सायं 3.30 से 6.30

श्रीनंद मन्दिर, नन्दगाँव

ग्रीष्मकाल में प्रातः 5.30 से 11.30 सायं 4.00 से 7.00
शीतकाल में प्रातः 6.30 से 11.00 सायं 3.00 से 7.00

नोट-पर्व त्यौहारों के दिन समय में परिवर्तन हो सकता है ।

★

जिला मथुरा
हरयाणा
जि॰ फरीदाबाद
भरतपुर
(राजस्थान)
जिला अलीगढ़
जिला आगरा
जि॰ एटा
नौहझील
सुरीर
मांट
राया
कोसी कलां
छाता
नन्दगाँव
छाता
चौमा
बरसाना
आझई
गोवर्द्धन
राधाकुंड
अड़ींग
सौंख
वृन्दावन
मथुरा
गोकुल
सादाबाद
सहपऊ
महावन
बल्देव
भैंसा
फरह
परखम
जमुना नदी
चिन्ह सूची
सड़कें
रेल्वे
नोट-केवल यात्रियों की जानकारी के लिये है।
INDU ART, MTR.